दूसरी सृष्टि

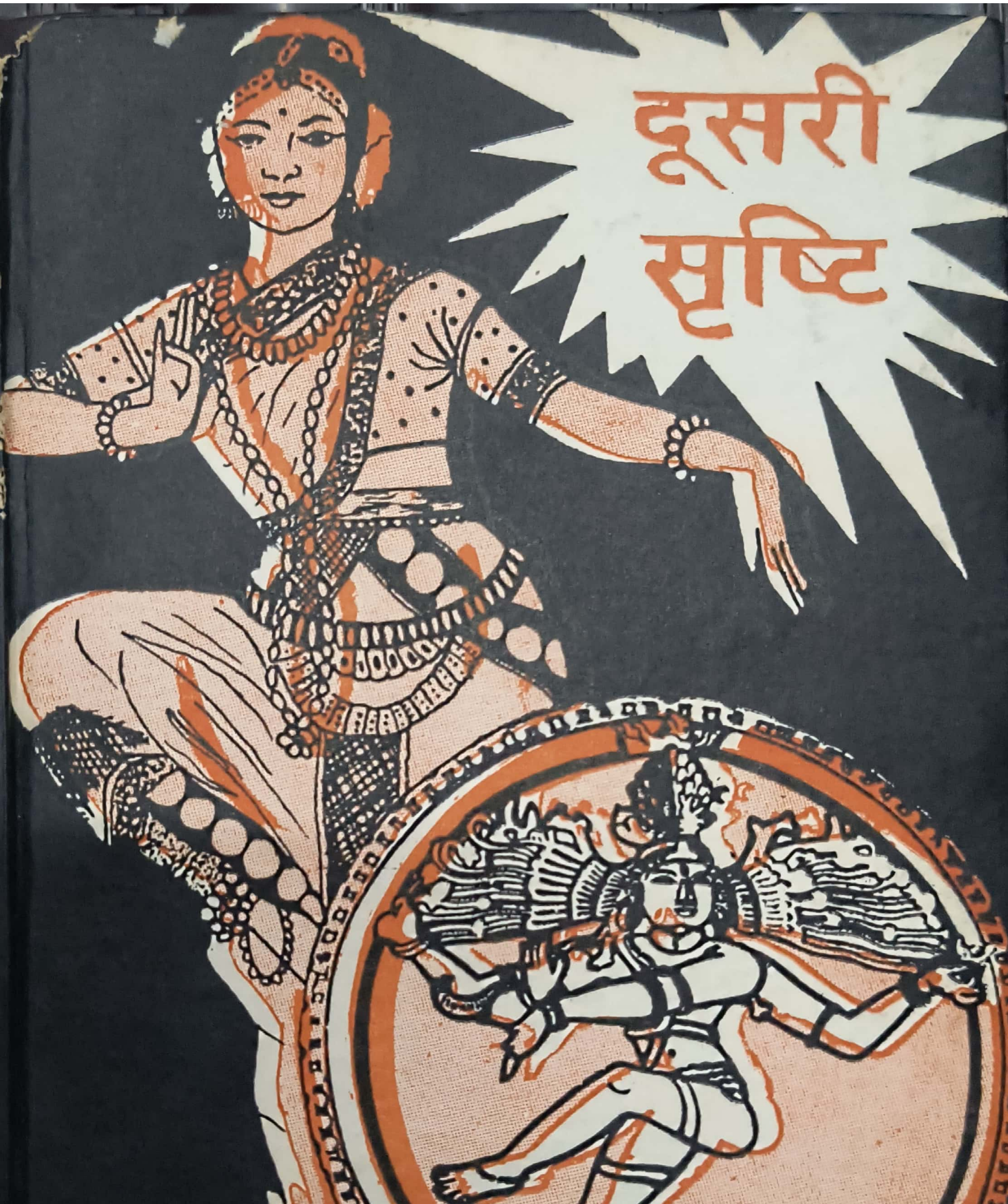

श्याम मोहन अस्थाना

दूसरी सृष्टि ○ श्याम मोहन अस्थाना

दूसरी सृष्टि

दूसरी सृष्टि

(वैदिक युग की पृष्ठभूमि में एक विचार नाटक)

श्याम मोहन अस्थाना

राधारानी प्रकाशन
दिल्ली-110032

प्रकाशक : राधारानी प्रकाशन
29/61 गली नं.11, विश्वास नगर,
दिल्ली-110032

फोन : 2228285

© श्याम मोहन अस्थान

प्रथम संस्करण 1998

मूल्य : 60.00 रुपये

आवरण : विजेन्द्र सिंघल

लेज़र टाइपसेट : शिवम् ग्राफिक, दिल्ली-110032
मुद्रक : कलरप्रिंट, दिल्ली-110032

जनमानस के अन्तर्जगत् में रचे–बसे संचरणशील आद्यबिंब, जातीय–प्रतीक, पुराकथा न केवल जाति–समूह की परम्परागत सांस्कृतिक अस्मिता, मान्यताओं एवं मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम हैं अपितु देशकाल की संगति में मनुष्य के वैयक्तिक और सामाजिक आचरण, ज्ञान व्यवहार, करणीय–अकरणीय के विवेक के बोध का प्रथम एवं अंतिम कोश भी हैं। यही कारण है कि हिन्दी की रचनात्मकता के लिये ये जातीय–प्रतीक, पुराकथाएँ वर्तमान के मूल्यगत विचारों एवं यथार्थ को सम्पूर्ण मानवीय आश्वस्ति के साथ सम्प्रेषित करने का प्रिय माध्यम रहे हैं और हिन्दी–मन अतीत एवं वर्तमान के बीच जीवंत सम्पर्क–सूत्र तलाश कर इतिहास एवं समय में घटित परिवर्तन को मूल्यबोध के स्तर पर अपने अंदर समाविष्ट करते हुए स्वयं को संस्कारित करता रहा है। भले ही इन आद्यबिंबों, पुराकथाओं, पौराणिकता के आवरण पर घटनात्मक–शृंखला, यथातथ्यात्मकता के अभाव का आरोप लगे किन्तु इससे कोई इंकार नहीं कर सकता कि ये जीवन के प्रति एक काल्पनिक या वायवीय दृष्टिकोण के द्योतक नहीं अपितु जातीय–जीवन के अनुभवों पर टिके हुए व्यापक एवं लोक–स्वीकृत सत्य हैं जहाँ से राष्ट्र एवं संस्कृति की समूची आत्मिक चेतना के इतिहास का परिचय पाया जा सकता है। वैदिक–युग की पृष्ठभूमि पर आधारित प्रो. राम मोहन अस्थाना का नाटक 'दूसरी सृष्टि' अपने पौराणिकता के आवरण के भीतर से इसी आत्मिक चेतना के इतिहास एवं समय की सापेक्षता में परिभाषित होते मनुष्य के सुख–दुःख, प्रेम, बेहतरी के सपने के साथ सम्वाद करता है, 'दूसरी सृष्टि' रचता है। नाटककार वैदिक–युग की पृष्ठभूमि में समकालीन समय की ज्वलंत समस्याओं जातिवाद, नस्ल की श्रेष्ठता के मिथ्याभिमान, नारी–शोषण, अन्तर्जातीय–विवाह के किन्तु–परन्तुओं से जूझता है। यह नाटक उन स्थितियों की पड़ताल करता है जिन्होंने हमारे जातीय जीवन में विष घोले हैं। सीधी सरल शब्दावली एवं प्रहसनपूर्णता के बीच नाटककार पौराणिक कलेवर की मर्यादा को बचाए रखते हुए समकालीनता की धड़कन को सुनने में सफल है। वहीं पुनः प्रत्येक अंक की शुरुआत में और जगह–जगह दिये गये दृश्यबंध एवं साजसज्जा के अन्य अवयवों से संबंधित पर्याप्त रंगसंकेत नाटक के रंगमंचीय संदर्भ को भी प्रखरता से उभारते हैं।

डॉ. रमेश गौतम
हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दूसरी सृष्टि

पात्र

(१) विश्वामित्र : भरत कुल के नरेश
(२) ऋक्ष : विदूषक
(३) राजा शबर : असुर नरेश
(४) भैरव : असुर पुरोहित
(५) तुग्र : असुर सेनापति
(६) राजा दिवोदास
(७) प्रतर्दन : आर्य सेनापति
(८) कोषपाल
(९) अगस्त मुनि
(१०) वृक : आर्य नागरिक
(११) प्रतीप : आर्य नागरिक
(१२) मघवन : आर्य नागरिक
(१३) राजकुमारी उग्रा
(१४) कुमारी सुरा
(१५) कुमारी मयूरा
(१६) कुमारी मेघा
(१७) देवी लोपामुद्रा
आर्य और असुर प्रतिहारीगण

प्रथम अंक :

पहला दृश्य

(१) भैरव
(२) उग्रा
(३) सुरा
(४) मयूरा
(५) मेघा
(६) शंबर
(७) तुग्र
(८) विश्वामित्र
(९) ऋक्ष

'दूसरी सृष्टि'

दो अंकों का नाटक,

लेखक–प्रो. श्याम मोहन अस्थान, आरा (बिहार)

'दूसरी सृष्टि प्रो. श्याम मोहन अस्थाना की नूतन नाट्य सृष्टि है। मैंने इसे बहुत ही रुचि लेकर पढ़ा है। बल्कि यूँ कहना चाहिए कि इस कृति में कुछ ऐसी प्रेरणा है जो पाठक को सध्य भाव से अपने में तल्लीन कर लेती है। मुझे इसने तल्लीन किया है, इसलिए में इसका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। वैदिक युग की पृष्ठभूमि पर आधारित दो अंकों का यह ऐतिहासिक नाटक भले ही इतिहास के आधार को लेकर लिखां गया है और इस ऐतिहासिक युग पर पूर्ण प्रकाश डालता भी हो, परन्तु इसमें हमारे वर्तमान जीवन को सही रूप में उपस्थित करने और भविष्य का मार्ग प्रदर्शन करने की क्षमता भी है। दूसरे शब्दों में यह जीवन के शाश्वत तत्वों पर भी आधारित है और इसलिए साहित्य का सच्चा स्वरूप उपस्थित करता है। नाटक केवल पढ़ने के लिए ही नहीं लिखा जाता, यह आलेख मात्र ही नहीं है। यह दृष्य काव्य है। कहीं मेंने पढ़ा था कि नाटक समग्र कला (टोटल आर्ट) है। केवल शब्दों के कौशल पर ही इसका वितान नहीं खड़ा किया जा सकता। नाटक लेखक को अभिनेयता, दृष्य योजना, मंच सज्जा का ज्ञान भी आवश्यक है ये सारी बातें इस कृति में पायी जाती है। इस नाटक को बहुत आसानी से खेला जा सकता है। इसकी भाषा आडम्बरहीन, सीधीसादी और प्रभावोत्पादक

तथा हृद्‌य को स्पर्श करने वाली हैं न तो संस्कृत के शब्दों से बोझिल हुई है और न सस्ते और प्रचलित शब्दों के द्वारा मनुष्य के मस्तिष्क के उपरी सतह को सहला देने वाली है। यह दर्शकों को अपनी स्थिति और सामाजिक व्यवस्था पर फिर से दृष्टिपात करने के लिए प्रेरित करेगी। मेरा अपना ख्याल है कि इस नाटक में डाइरेक्टर को हस्तक्षेप करने का अवसर नहीं मिलेगा। नहीं तो हिन्दी में ऐसे नाटकों की कमी नहीं है जो पाठ्य रूप में दूसरा ही दीख पड़ते है, पर रंगमंच पर प्रस्तुत करने पर उनका स्वरूप दूसरा ही हो जाता है। यह बात दूसरी सृष्टि के साथ नहीं चल सकेगी। यह नाटक अपनी अनूठी शैली, मीठी और व्यंग्यों तथा सत्यप्रियता के लिए सदा याद किया जायेगा। नाटक में गाढ़ बंधत्व है, सारी कड़ियाँ परस्पर संबद्ध है, कहीं भी शिथिलता नहीं दीख पड़ती। पात्रों के चरित्र के विकास में नाटककार ने अपूर्व सूक्ष्मदर्शिता से काम लिया है। विश्वामित्र अक्ष-सुरा के चित्र के हृद्‌य पर अमिट प्रभाव छोड़ने की सामर्थ्य रखते हैं और उन्हें जीवन समस्याओं पर सुलझे ढंग से सोचने की प्रेरणा देंगे।

स्व. (देवराज उपाध्याय)
भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
राजस्थान

दूसरी सृष्टि

प्रथम अंक

(पहला दृष्य)

स्थान : अनार्य राजा शंबर का गढ़ ।

समय : वैदिक युग : एक दिन, सुबह दृश्यबंध - वन और पर्वत की एक पांत । बीच में अनार्यों के देवता उग्रकाल शंकर की मूर्ति ।

(अनार्य पुरोहित भैरव साधना में लीन है)

(नेपथ्य से गीत)

गीत : शंकर शिव महादेव,
नीलकंठ शूलपाणि ।
गले नाग, डमरू कर
अंग ले विभूतन ।
जटाजूट सोहे गंग
भाल चंद अरि अनंग
राजत हिमगिरि पर
ध्यान धरत सियां राम !

भैरव (उठ कर) हे उग्रकाल, तूम असुर जाति के पूज्य, पोषक और रक्षक हो । तुम दृष्ट आर्यों का विनाश कर हमारी रक्षा करो ।

हे त्रिलोचन, जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों के प्रहार से अंधकार को चूर-चूर कर देता है, उसी तरह तुम्हारे तीसरे नेत्र के प्रहार से आर्य सेना मृत्यु को प्राप्त हो ।

हे देवाधिदेव, असुर जाति का राजा शंबर धूर्त आर्यों के साथ एक

जीवन और मृत्यु के संघर्ष में जूझ रहा है ।
हे तेजस्विन, अपने पिनाक धनु से शत्रुओं का नाश कर हमें विजय दो ।
(असुरराज शंबर की कन्याएं उग्रा और सुरा एवं दो असुर बालिकाएं मयूरा और मेघा का प्रवेश । सभी के हाथों में पूजा की थाली है)

भैरव : देवी उग्रा, भगवान् उग्रकाल की पावन प्रतिमा पर एक नीलकंठ लगातार परिक्रमा कर रहा है । हमारी विजय निश्चित जान पड़ती है ।

उग्रा : पूज्यवर, भगवान् शंकर के मुख पर एक अनोखा प्रभा मंडल है । देखिये, वह मुस्करा रहे हैं ।

भैरव : देवी, दुष्ट आर्यों ने हमारी भूमि हमसे छीन ली है । हमारी गायों को बलपूर्वक ले लिया है । छल से असुर यूवकों और कन्याओं का अपहरण किया है । आज हम अपनी ही धरती से दूर जंगलों और पहाड़ों में भटक रहे हैं ।

उग्रा : परम पूज्य, क्या इन्हें अपने अन्याय की पहचान है । सुनती हूं कि यूद्ध की सफलताओं ने इन्हें अत्यन्त अहंकारी बना दिया है ।

भैरव : हां, मैं इनके मंत्रों को जानता हूं । वेदों के नाम पर इन्होंने हमारे विरुद्ध घृणा का महाकाव्य लिखा है ।

सुरा : हमारे शत्रुओं ने अनेक असुर कन्याओं का अपहरण किया है । सुनती हूं कि इनके साथ पशुओं के जैसा व्यवहार किया जा रहा है ।

भैरव : हमें भी दूष्ट आर्यों से घृणा का पाठ सीखना चाहिये । एक घृणा के जवाब में दसगुनी घृणा । विष से ही विष का निदान होता है ।

उग्रा : पूज्यवर, क्या विष से सचमुच विष का निदान होता है । अगर यही सच हो तो भगवान् शंकर ने स्वयं विष क्यों

पीया था ?

भैरव : नहीं, हमें भगवान् शिव की करुणा नहीं चाहिये। हमें चाहिये, कालकूट। यही विष हमें विजय दिला सकता है।

उग्रा : आइये, हम सब भगवान् शंकर की अर्चना करें। उनकी कृपा से असुर जाति की विजय निश्चित है।

(सामूहिक स्वर)

ओम् नमो शिवायः ! ओम् नमो शिवायः ! ओम नमो शिवायः !
(नेपथ्य में कोलाहल का स्वर। दूर विजय–दुंदुभि के स्वर। आवाज़ धीरे-धीरे निकट आती है)

भैरव : लगता है कि हमारी सेना वापस लौट रही है ! उल्लासपूर्ण तुरही नाद निश्चय विजय की सूचना है। राजा शंबर के पराक्रम से शत्रुओं की पराजय हुई है।

उग्रा : हे तेजस्विन, तुम्हारी करुणा के प्रकाश से असुर जाति को विजय मिली है। हम अत्यन्त विनीत होकर तुम्हारे चरणों में अपनी श्रद्धा निवेदित करते हैं।

भैरव : देवी, विजय घोष निकटतर आ रहा है। लगता है कि महाराज सीधे मंदिर की ओर आ रहे हैं।

उग्रा : जा रही हूं, पूज्यवर ! एक विजयी सेना के स्वागत के लिये अनेक प्रबन्ध करने होंगे।

(उग्रा, सुरा, मयूरा एवं मेघा का प्रस्थान)

(तीव्रतर तुरही नाद)

भैरव : बजाओ, बजाओ और जोर से बजाओ। असुर जाति ने युद्ध भूमि में अपने रक्त से नया इतिहास लिखा है।

इंद्र और वरुण आओ और आर्यों की इस पराजय के साक्षी बनो ! महाराजा शंबर के आदेश से अब पूरे सिन्धु प्रदेश में वेद-पाठ बंद हो जायगा । सुनो इंद्र, यह सरस्वती प्रदेश अब यज्ञ के नीले धुएं से कभी कलुषित नहीं होगा !

(असुर राजा शंबर, असुर सेनापति तुग्र, वंदी राजा विश्वामित्र और विदूषक ऋक्ष का प्रवेश)

भैरव : भगवान् उग्रकाल के मंदिर में असुर जाति के उद्धारक, विजयी राजा शंबर का स्वागत है !

शंबर : प्ररोहितराज, यह पहला प्रहार था । सूर्य के उदय होने से पूर्व ऊषा का वैभव दिखाई पड़ता है । एक इतिहास मर गया । एक दूसरा इतिहास जन्म ले रहा है ।

विश्वामित्र : असुरराज, पूजा के समय चोरों की तरह किया गया अपरहण युद्ध नहीं है । यह विजय भी नहीं है । इसके लिये इतना शंखनाद व्यर्थ है ।

ऋक्ष : महाराज, असुरपति अत्यन्त नीति कुशल है । उनके लिये अनुचित उचित है, उचित ही अनुचित ।

शंबर : विश्वामित्र, तुम्हारे मुंह से धर्म की बात सुनकर आश्चर्य हो रहा है । चलो भगवान् शंकर के मंदिर में इतना ज्ञान तो जगा ।

विश्वामित्र : शंबर, सुना था कि तुम महान वीर हो । लेकिन देख रहा हूं कि तुम चोरी और अपहरण में भी परम प्रवीण हो ।

ऋक्ष : महाराज, असुरपति ने हमारा अपहरण कर परम वीरता का परिचय दिया है ।

शंबर : विश्वामित्र, यह विद्या हमने तुमसे ही सीखी है । इस

बार तुम्हारे ही अस्त्र से तुम पर प्रहार किया है ।

विश्वामित्र : हमारा ही अस्त्र ! क्या मतलब !

शंबर : सीधी लड़ाई में असुर हमेशा विजयी रहे हैं । तब तुमने छल का आश्रय लिया । यह मंत्र तुम्हें इंद्र, वरुण और विष्णु ने दिया है ।

विश्वामित्र : असुरपति, देवनिन्दा पाप है ।

शंबर : यह कैसे देवता हैं जो सिर्फ आर्यों का पक्ष देखते हैं । तुम्हारे सारे देवता सिर्फ अन्याय के साक्षी ही नहीं, स्रष्टा हैं ।

विश्वामित्र : नहीं, यह झूठ है ।

शंबर : समुद्र मंथन के समय भी तुम्हारे देवताओं ने हमें धोखा दिया । शेषनाग के हजार फणों का जहर हमने झेला लेकिन अमृत के बंटवारे में सिर्फ छल था । समुद्र मंथन में तुम्हें रत्न मिले, हमें सिर्फ समुद्र का काला कीचड़ दिया गया ।

ऋक्ष : महाराज, असुरपति की जिह्वा उसी जहर को उगल रही है । उनके मुंह से वही काला कीचड़ झर रहा है ।

शंबर : तुम्हारा मित्र बहुत वाचाल है । लेकिन मुझे आश्चर्य नही है । यह बाचलता तुम्हारा जातीय गुण है ।

विश्वामित्र : शंबर, यह मेरा मित्र और सखा ऋक्ष है । विपत्ति में भी यह गंभीर नहीं रह पाता ।

शंबर : विश्वामित्र, हम तुम्हारा वध कर सकते थे । लेकिन हमने तुम्हे एक योजना के अनुसर वंदी बनाया है । आर्यों ने हजारों असुर युवक-युवतियों को दास बनाकर रखा है । जब तक वे मुक्त नहीं होते तब तक तुम दोनों बंधक रहोगे ।

ऋक्ष : असुरपति, वंदियों को भी जीने का अधिकार होता है। सुबह से मुख में अन्न का एक दाना भी नहीं गया है।

शंबर : चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। तुम दोनों राज-बन्दी हो। तुम्हें सभी तरह की सुविधा मिलेगी।

ऋक्ष : राजन् हमें तो सोमपान का अभ्यास है सुनता हूँ कि असुर बहुत तीखी मदिरा का पान करते हैं।

शंबर : आर्य विदूषक, बहुत वाचाल बनने की जरूरत नहीं है। एक राजबन्दी को भोजन और मदिरा की कमी नहीं होती।

तुग्र : राजन्, ये आर्य बहुत चतुर होते हैं। इनकी सुरक्षा की विशेष व्यवस्था होनी चाहिये।

शंबर : इन्हे, भगवान् उग्रकाल के मंदिर में बंधे रहने दो। शिव के तीसरे नेत्र के सम्मुख इनका छल-बल व्यर्थ हो जायगा।

तुग्र : अगर इन्होंने भागने का प्रयत्न किया तो ?

शंबर : तब इनका तत्काल वध कर दिया जाय।

भैरव : महाराज, उग्रकाल के पूजन की बेला उपस्थित है।

शंबर : पुरोहित राज, भगवान् का विधिवत् पूजन कीजिये। उनकी ही कृपा से हमें महान सफलता मिली है।

भैरव : (आरती करते हुए शिव की वंदना करता है) ओम नमो शिवाय ! ओम नमो शिवाय ! ओम नमो शिवाय ! (एक पुजारिन का नृत्य करते हुए प्रवेश)

(गीत)

नाचो, हे महाकाल !
रुद्ररूप, रुद्र ताल !
शंकर प्रलयंकर से
मुक्त केश, अग्नि भाल !

नाचो है, महाकाल !
डिग-डिग-डिग डमरू नाद,
ध्वंस राग, शिव पिनाक,
खंड- खंड, धरा-गगन,
विकट हास, मृत्यु-ज्वाल !
नाचो हे महाकाल !
थर-थर-थर, कंपत लोक
दसो दिशा, मृत्यु - शोक !
डग-मग-पग, सूर्य-चन्द्र
तारक गण उलट चाल !

(पट-परिवर्तन)

दूसरा दृश्य

(१) विश्वमित्र
(२) ऋक्ष
(३) उग्रा
(४) सुरा
(५) शंबर
(६) तुग्र
(७) प्रतिहारी

प्रथम अंक

(दूसरा दृश्य)

स्थान : वही

समय : दूसरे दिन, सुबह

(उग्रकाल के मंदिर में सूली से बंधे विश्वामित्र और ऋक्ष)

ऋक्ष : महाराज, इस लौह-स्तम्भ से बंधे-बंधे पैर अकड़ गये। चार दिनों के बाद हममे और इस लौह स्तम्भ में कोई अंतर नहीं रह जायेगा।

विश्वामित्र : ऋक्ष, यह कोई मामूली स्तम्भ नहीं है। यह वंदियों और विद्रोहियों को दंड देने वाला सूली-स्तम्भ है। हमें उचित सम्मान दिया गया है।

ऋक्ष : भगवान् वरुण रक्षा करें। मैंने इस स्तम्भ को गले लगाकर सोने की चेष्टा की। लेकिन नींद एक रूठी हुई नायिका सी पास नहीं आई।

विश्वामित्र : मित्र, सूली से लगकर नहीं सोया जाता। सूली के नोक पर सोने से अनन्त निद्रा मिलती है।

ऋक्ष : धन्य हो राजन्, विपत्ति में हमारा काम बदल जाता है। मैं गंभीर बन जाता हूं और तूम विदूषक।

(उग्रा और सुरा का पूजा की थाली के साथ प्रवेश)

उग्रा : सुरा, जरा इन वंदियों को तो देख। पर्वत पर जमे हिम की तरह इनका रंग कितना गोरा और उजला है।

ऋक्ष : हां-हां, हमें ध्यान से देखिये । हमारा तन ही नहीं, मन भी बहुत उजला है ।

उग्रा : यह युवक बहुत वाचाल है । प्रकृति से विदूषक जान पड़ता है ।

ऋक्ष : हां, असुर सुन्दरियो, तुमने ठीक ही परखा है । ये है भरत कुल के नरेश, आर्य विश्वामित्र और मैं -इनका मित्र और विदूषक, ऋक्ष हूं ।

सुरा : बहन, मुझे इन वंदियों के उजले रंग के रहस्य का पता लग गया !

ऋक्ष : कहो देवी, हम स्वयं अपने सुन्दर वर्ण का रहस्य नहीं जानते हैं ।

सुरा : बहन, कल रात हमने पिता के लिये जो रोटियां सेंकी, उनमें कुछ रोटियां कच्ची थीं । उन कच्ची रोटियों का रंग बिलकुल इन वंदियों के जैसा था । (सब हंसते हैं)

ऋक्ष : हां देवी, तुम ठीक कहती हो । हम दोनों अभी कुंवारे और कच्चे हैं । विवाह की आगमें पके बिना हम कैसे रंग पकड़ सकते हैं । (सब हंस पड़े)

सुरा : लगता है कि तुम्हारा राजा गूंगा है । शायद इसकी मां ने इसे बोलना नहीं सिखाया है ।

ऋक्ष : हां, देवी ! हमारा राजा बिलकुल गूंगा है । कल रात का भोजन इन्हें अच्छा नहीं लगा पर इन्होंने कुछ नहीं कहा । रात-भर सूली से बंधे-बंधे ये सो नहीं सके पर इन्होंने कोई विरोध नहीं किया । इन रस्सियों की रगड़ से देह में रक्त छलछला आया है पर ये आह-ऊह भी नहीं करते हैं ।

उग्रा : ओह इतनी यंत्रणा । प्रतिहारी !

प्रतिहारी : *(आगे बढ़ कर)* आज्ञा हो, देवी !

उग्रा : इन वंदियों को बंधन-मूक्त करो ।

प्रतिहारी : लेकिन देवी, ये राजवंदी है ।

उग्रा : मैं इन्हें मुक्त करने को नहीं कह रही हूं । ये कारागार में ही रहेंगे । मंदिर का प्रांगण ही इनकी स्वतंत्रता की सीमा होगी ।

प्रतिहारी : देवी, ये आर्य बहुत चतुर होते हैं । कहीं ये भाग गये तो अनर्थ हो जाएगा ।

उग्रा : अगर ये भागने का प्रयत्न करें तो इनका वध कर दिया जाय । पूज्य पिता जी की भी यही आज्ञा थी ।

(प्रतिहारी वंदियों का बंधन खोलता है)

(उग्रा और सुरा का प्रस्थान)

ऋक्ष : बन्धुवर, राजकुमारी उग्रा सचमुच ही उग्रा है । चली गयी पर लगता है कि धरती अभी तक डोल रही है ।

विश्वामित्र : शंबर की पुत्री है । तेजस्विता तो इसका पैतृक गुण है ।

ऋक्ष : मित्र, कुमारी सुरा तो सचमुच सुरा है । देखने से ही नशा चढ़ता है ।

विश्वामित्र : श्रीमान् विदूषक, यहां चटपट प्रेम का व्यापार मत शुरू कर देना । बड़ा महंगा पड़ेगा ।

ऋक्ष : बंधुवर, राजकुमारी ने बंधन खुलवा दिया पर एक दूसरा बंधन नागपाश सा लिपटता जा रहा है ।

विश्वामित्र : ऋक्ष, ये लड़कियां हमारी जाति या कुल की नहीं है । विनोद के लिये भी पात्र - अपात्र का ध्यान रखना चहिये ।

ऋक्ष : राजा विश्वामित्र, तुम बिलकुल पत्थर की शिला हो ।

(राजा शंवर और सेनापति तुग्र का प्रवेश)

शंबर : भरत-कुल शिरोमणी, सानन्द हैं न ?.
स्वागत सत्कार में कोई ÷त्रुटि तो नहीं है ।

ऋक्ष : असुरराज, हम बहुत प्रसन्न हैं। सूली को ही सेज मानकर हम बहुत चैन से सोये ।

शंबर : राजकुमारी उग्रा के सौजन्य से वंदियों के बंधन शिथिल कर दिये गये हैं। लेकिन सावधान, भागने वाले शत्रु के लिये मृत्यु ही एक मात्र दंड है ।

ऋक्ष : नहीं असुर-शिरोमणी, भागने का कोई प्रश्न ही नहीं है। तुमने हमें दामाद सा प्रेम दिया है। ऐसा सुख बहुत भाग्य से मिलता है ।

शंबर : हमने आचार्य अगस्त को संदेश भिजवाा दिया है। हमारी शर्तों के पूरी होने पर ही तम्हें मुक्त किया जायगा ।

विश्वामित्र : यह तो दस्यु का सा आचरण है। शत्रु का अपहरण कर अब फिरौती का शुल्क मांग रहे हो ।

ऋक्ष : लेकिन असुर सम्राट की शर्तें क्या हैं ?

शंबर : सप्तसिंधु से आर्यों का प्रस्थान और सभी असुर वंदियों की मुक्ति।

विश्वामित्र : इन शर्तों की पूरी होने की कोई संभावना नहीं है।

शंबर : मैंने इन शर्तों को पूरा करने के लिये एक महीने का समय दिया है ।

विश्वामित्र : यह असंभव है। ये शर्तें पूरी नहीं हुईं तो जानते हो, क्या होगा ।

ऋक्ष : शीघ्र काहे, दैत्यराज ! तुम्हारी बातों को सुनने के लिये मेरा ह्रदय जोर-जोर से धड़क रहा है ।

शंबर : अगर आचार्य अगस्त और राजा दिवोदास ने एक महीने के भीतर इन शर्तों को पूरा नहीं किया तो भगवान्

शंकर की पूजा के बाद तुम दोनों का वध कर दिया जायगा ।

विश्वामित्र : शंबर, हम तुम्हारे वंदी हैं । तुम जब चाहो, जैसे चाहो हमारा वध कर सकते हो । पर सप्तसिंधु से आर्यों का निष्कासन - यह एक असंभव योजना है ।

शंबर : देखता हूं कि बारम्बार पराजित होने पर भी तुम्हारा दंभ नहीं टूटा है । मैं पूछता हूं कि आर्यों को सप्तसिन्धु में रहने का क्या अधिकार है ?

विश्वामित्र : शंबर, आर्य भी इसी धरती के पुत्र हैं । हमारी अनगिनत पीढ़ियां इसी धरती में पली-पुसी हैं ।

शंबर : यह एक विजेता का तर्क है । एक आततायी का दंभ है ।

विश्वामित्र : शंबर, सृष्टि के आदिकाल में हमारे पूर्वजों ने सिन्धु के तट पर ही ऊषा के दर्शन किये थे । हमारे ऋषियों ने इन्हीं नदियों के जल से देवताओं की अर्चना की थी । वैदिक ऋचाओं के स्वरों से धरती और आकाश पवित्र हुए थे । आज इस धरती से हमारे निष्कासन की बात तुम्हारे जैसा दंभी ही सोच सकता है ।

शंबर : विश्वामित्र, इतिहास तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा । तुम्हारी जाति ने धरती के पुत्रों पर भयानक अत्याचार किये हैं ।

विश्वामित्र : शंबर, हमारी जातीय तेजस्विता के कारण तुम हरेक क्षेत्र में पराजित हुए हो । इसमें कोई अन्याय नहीं है ।

शंबर : जिसे तुम जातीय तेजस्विता कहते हो वह तुम्हारी धूर्तता का ही दूसरा नाम है ।

विश्वामित्र : युद्ध में छल और बल दोनों आवश्यक हैं ।

शंबर : तुम सीधे युद्ध में हमेशा पराजित हुए हो। जब भी जीते हो, छल से जीते हो।

विश्वामित्र : शंबर, आर्यों ने पूरे सिन्धु प्रदेश को आंगन सा लीप कर पवित्र किया है। जहां पहले जंगल थे, वहां अब खेत हैं। नदियों के किनरे ऋषियों के आश्रम हैं। वैदिक मंत्रों के आह्वान पर देवता सप्तसिन्धु की परिक्रमा करते रहते हैं।

शंबर : तुम्हारे इस स्वर्ग की नींव में असुरों का रक्त है। हरेक आश्रम के नीचे हमारे पुत्रों के कंकाल हैं। तुम्हारे साम गायन के पीछे असुर युवकों एवं युवतियों के करुण चीत्कार हैं।

विश्वामित्र : शंबर, यज्ञ की वेदी तैयांर करते समय भूमि को लीपा जाता है। इस क्रिया में बहुत से कीड़े-मकोड़ो मर जाते हैं। इससे यज्ञ की पवित्रता नहीं नष्ट होती।

शंबर : यह तुम्हारा जातीय दंभ है। तुमने असुर जाति को हमेशा हीन समझा है।

विश्वामित्र : तुम स्वयं अपने बारे में हीन भावना रखते हों।

शंबर : यह झूठ है।

विश्वामित्र : नहीं, यह झूठ नहीं है। एक आर्य परिवार में जाओ। एक सत्यवती या धोषा मक्खन बिलो रही है। बाहर एक वशिष्ठ यज्ञ के द्वारा देवताओं का आह्वान कर रहा है। यज्ञ का नीला धुआं धरती और आकाश को जोड़ देता है।

शंबर : तुमने असुर परिवारों को नहीं देखा। धरती के इन पुत्रों में शिशुओं सा भोलापन है।

विश्वामित्र : मैं असुर परिवारों से अधिक नहीं मिल पाया हूं। पर जितना जाना है, गहरी घृणा हुई है। मांस, मदिरा और मैथुन - यही तुम्हारे जीवन की पूरी परिधि है।

शंबर : मैं तुमसे एक सवाल पूछता हूं। तूमने हजारों असुर युवकों को वंदी बनाकर रखा है। तुमने उन्हें बराबरी का स्थान क्यों नहीं दिया।

विश्वामित्र : शंबर, सामाजिक व्यवहार में पात्र और अपात्र का ध्यान रखना ही पड़ता है।

शंबर : ठीक है, अगला युद्ध तय करेगा कि हमारे बीच पात्र कौन है और अपात्र कौन।

विश्वामित्र : शंबर, तुम्हारी चुनौतियों का उचित उत्तर मिलेगा। आर्य जाति तपस्या के सहारे आगे बढ़ी है। ऐसी जातियां कभी पराजित नहीं होतीं।

तुग्र : महाराज, इन वंदियों के बारे में विशेष सतर्कता की जरूरत है।

शंबर : नहीं सेनापति, हम आर्यों की तरह अपने वंदियों को कष्ट नहीं देना चाहते। हां अगर वे दुर्व्यवहार करें तो हम उन्हें दंड देना जानते हैं।

ऋक्ष : नहीं राजन्, इतना मधुर आतिथ्य छोड़कर कोन जाना चाहता है। किसी पेटू कवि ने ठीक ही कहा है - पराया अन्न दुर्लभ है। शरीर तो बारम्बार मिलता है।

(पट परिवर्तन)

पहला अंक
तीसरा दृश्य

पात्र

विश्वामित्र

ऋक्ष

सुरा

उग्रा

पहला अंक

तीसरा दृश्य

स्थान : वही

समय : कुछ दिन बाद

(विश्वामित्र एक भोजपत्र पर कुछ लिख रहा है। दूसरे कोने पर ऋक्ष मदिरा पान कर रहा है। कुमारी सुरा उसे मदिरा डाल कर दे रही है।)

ऋक्ष : देवी सुरा, हमारे-तुम्हारे बीच मदिरा एक नयी भाषा बन गयी है। यह संबाद अभी शुरू ही हुआ है।

सुरा : ऋक्ष, एक सीमा के बाद मदिरा प्रेम की परिभाषा नहीं रह जाती। वह प्रेम का विकल्प बन जाती है।

ऋक्ष : नहीं सुरा, मदिरा में तुमसे अधिक नशा थोड़े ही है।

सुरा : तुम्हारे मित्र विश्वामित्र तो दिनोदिन मौन होते जा रहे हैं।

ऋक्ष : उसे भी तुम्हारी जैसी प्रेमिका और मदिरा का पात्र चाहिये।

सुरा : लगता है कि वे प्रेम का ककहरा भी नही जानते। बहन उग्रा कई दिनों से उनकी सेवा कर रही है। लेकिन कामना की यह लहर हर बार पर्वतशिला से टकरा कर चूर-चूर हो जाती है।

ऋक्ष : देखो न, वह क्या लिख रहा है। क्यों मित्र, भोजपत्र पर प्रेम-पत्र लिख रहे हो ?

विश्वामित्र : ऋक्ष, क्या घड़े की सारी मदिरा समाप्त हो गयी। अच्छा हो तुम मदिरा के महापात्र में ही डूब कर बैठ जाओ।

ऋक्ष : मित्र, तुम मेरे प्रश्न को टाल गये। लगता है कि राजकुमारी उग्रा से जो स्वयं नहीं कह सके उसे पत्र में लिख रहे हो।

विश्वामित्र : ऋक्ष, मदिरा तुम्हारे सिर पर अच्छी तरह चढ़ गयी है। सुनो, मैंने रात्रि में एक मंत्र का दर्शन किया है। उसे ही लिख रहा हूं।

ऋक्ष : मंत्र, वह जरूर प्रेम मंत्र होगा। देवी उग्रा उस मंत्र को पढ़कर बहुत प्रसन्न होगी।

विश्वामित्र : चुप रहो, मैंने मंत्र में भगवान् वरूण की अर्चना की है। कितने सुन्दर शब्द हैं। कितनी सरस कविता है।

ऋक्ष : मित्र, तूम्हारे आस-पास एक जीवित कविता है। पहले उसका आह्वान करो।

विश्वामित्र : कैसी कविता ? क्यों पहेलियां बुझा रहै हो।

ऋक्ष : मित्र, एक सुन्दर लड़की बहुत सुन्दर कविता होती है। देवी उग्रा के सामने वेदों की सारी ऋचाएं बहुत हल्की लगती हैं।

विश्वामित्र : ऋक्ष, मैं तुंम्हारी क्षमता जानता हूं। मदिरा पान कर तुम काफी काव्यपूर्ण प्रलाप कर लेते हो।

ऋक्ष : वह देखो, सृष्टि की अनुपम रचना, कोमल-कांत-सरस कविता स्वयं उपस्थित हो रही हैं।

विश्वामित्र : ओ, देवी उग्रा पूजन के लिये आ रही हैं।

(उग्रा का प्रवेश)

ऋक्ष : अच्छा बंधुवर, हम दोनों मंदिर के प्रांगण में जा रहे हैं।

आज शरद पूर्णिमा है। मंदिर में गीत-नृत्य का आयोजन है।

विश्वामित्र : ठीक है, जाओ, रक्षक की अनुमति ले लो।

ऋक्ष : तुम भी चलोगे ?

विश्वामित्र : नहीं, मुझे इन वनवासियो के गीत-नृत्य में कोई रूचि नहीं है।

(ऋक्ष और सुरा का प्रस्थान)

उग्रा : आर्य विश्वामित्र, आज शरद पूर्णिमा है। कोई भी युवा कामना आज की रात्रि में अवश्य पूर्ण होती है।

विश्वामित्र : यह तो अपना-अपना विश्वास है, देवी।

उग्रा : आज की रात असुर युवक और युवतियां एक दूसरे का वरण करते हैं। भगवान् शिव के सम्मुख माल्यार्पण पर्याप्त माना जाता है।

विश्वामित्र : यह अपनी-अपनी प्रथा है।

उग्रा : आर्य ऋक्ष और सुरा आपस में बचन-वद्ध हो चुके हैं। वे आज भगवान् शिव के सम्मुख विवाह की शपथ लेंगे।

विश्वामित्र : देवी, आर्य ऋक्ष के चरित्र में दोष हैं। मुझे उसके आचरण के लिये खेद है।

उग्रा : बहन सुरा और आर्य ऋक्ष, दोनों वयस्क हैं। हमें तो इस सम्बन्ध में कोई आपति नहीं है।

विश्वामित्र : देवी, हमारे आचार्यों ने वर्ण के बाहर विवाह को वर्जित माना है।

उग्रा : लेकिन तुम्हारे आचार्य इन सम्बन्धों को कहां रोक पाये हैं। हजारों आर्य नागरिकों ने असुर कन्याओं को उप-पत्नी बना कर रखा है। ऋषियों के आचरण भी बहुत भिन्न नहीं है।

विश्वामित्र : देवी, मानवीय दुर्बलता अनेक लोगों को अधर्म की ओर प्रेरित करती है ।

उग्रा : यह एक झूठा तर्क है । तुम्हारे इसी वर्ण-बोध के कारण लाखों वर्णसंकर संतानें समाज के बाहर भटक रही हैं । जिन्हें तुम स्वीकार नहीं करते, वह तुम्हारा भयानक शत्रु बन जाता है ।

विश्वामित्र : देवी, हम अपने शत्रुओं से अच्छी तरह जूझना जानते हैं ।

उग्रा : यह भी एक झूठा हठ है । तुम्हारे जातीय अहंकार के कारण इस देश की सभी जातियां तुम्हारे विरुद्ध हो गयी हैं । इस विराट समुद्र के बीच तुम एक द्वीप की कब तक रक्षा करोगे ।

विश्वामित्र : भगवान् वरुण की कृपा से हमने युद्ध भूमि में सभी अनार्य जातियों को पराजित किया है ।

उग्रा : तुम्हारे आचार्यों ने सबसे पहले सृष्टि के मूल तथ्य को पहचाना था । उन्होंने कहा था कि अणु-अणु में ब्रह्म है । आज वे ही आचार्य कह रहै हैं कि ब्रह्म नहीं, सिर्फ गोरा रंग पूजनीय है ।

विश्वामित्र : देवी, तुम्हारे वैदिक ज्ञान ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया है ।

उग्रा : मुझे यह ज्ञान आचार्य भैरव ने दिया है । आचार्य भैरव आर्य ऋषि और असुर माता की संतान हैं । उन्होंने वेदों का विधिवत् अध्ययन किया है । किन्तु तुम्हारे समाज से बहिष्कृत होकर वे असुर कुल में आ गये । आज वे आर्य जाति के सबसे प्रखर आलोचक हैं ।

विश्वामित्र : देवी, अन्तरजातीय संम्बन्ध ऐसी ही विकृतियों को जन्म देते हैं ।

उग्रा : नहीं, ये विकृतियां तुम्हारी जातीय व्यवस्था से जन्म लेती हैं । यह कैसी व्यवस्था है जिसने करोड़ों ईश्वर के पुत्रों को समाज से बाहर रख दिया है ।

विश्वामित्र : देवी, हमारे पूर्वजों ने बहुत सोच-समझ कर यह व्यवस्था बनायी है ।

उग्रा : यह झूठ है । इससे लोगों में एक तरफ दर्प, दूसरी तरफ दैन्य की सृष्टि हुई है ।

विश्वामित्र : देवी, उधर देखो, भगवान् शंकर के मुख पर कैसा आलोक हैं ।

उग्रा : यह उनकी करूणा का प्रकाश है । भगवान् तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं ।

विश्वामित्र : बड़ी जागृत मूर्ति है । इनका तीसरा नेत्र कितना संवेदन शील है ।

उग्रा : आर्यपुत्र, बड़ा से बड़ा मौन एक दिन टूट जाता है । जब ऐसी स्थिति आती है तो मन की बात कहना बहुत मुश्किल हो जाता है ।

विश्वामित्र : देवी, में तुम्हारी बात नहीं समझ पा रहा हूं ।

उग्रा : आर्य विश्वामित्र, चाहती यही थी कि तुमसे घृणा करूं । लेकिन बहुत प्रयत्न करने पर भी हृदय के आग्रह को अस्वीकार नहीं कर सकी । तुमसे घृणा करना बिलकुल असंभव है ।

विश्वामित्र : असुर कुमारी, घृणा और प्रेम मनुष्य की सहज प्रवृतियां हैं ।

उग्रा : आर्यपुत्र, इसी मानवीय प्रवृति को सहज भाव से स्वीकार करो। भगवान् उग्रकाल को साक्षी मानकर मैं तुमसे अपना प्रेम निवेदित कर रही हूं।

विश्वामित्र : देवी उग्रा, यह क्या कह रही हो ?

उग्रा : (शंकर की प्रतिमा से माला उठाकर)
आर्यपुत्र, फूल की पंखुड़ियां कोमल होती है पर हृदय की भावनाएं उससे भी सुकुमार होती हैं। असुरराज शंबर की कन्या उग्रा आज अपने हृदय की युवा कामनाओं को तुम्हारे चरणों में अर्पित करती है।
(पैरों पर फूलों की माला डाल देती है)

विश्वामित्र : देवी उग्रा, क्या तुम्हारे पिता को तुम्हारे संकल्प का ज्ञान है ?

उग्रा : एक असुर कन्या अपने जीवन साथी का वरण कर सकती है। इसमें पिता की अनुमति आवश्यक नहीं है।

विश्वामित्र : देवी, हमारे नियम अधिक कठोर हैं। हमारे आचार्य इस संबन्ध को कभी स्वीकार नहीं करेंगे।

उग्रा : आर्यपुत्र, एक मन की भाषा होती है। हृदय के आवेगों के सम्मुख आचार्यों के आदेश झूठे पड़ जाते हैं।

विश्वामित्र : देवी, यह प्रस्ताव बिलकुल असंगत है। ठंडे मन से विचार करो। कल तक तुम इसे एक स्वप्न जानकर भूल जाओगी।

उग्रा : नहीं आर्यपुत्र, बहुत ठंडे मन से विचार कर चुकी हूं। कई दिनों तक 'हां' और 'ना' के बीच भटकती रही। कभी प्रेम प्रबल होता तो कभी घृणा। अंत में भगवान् उग्रकाल का आवाहन किया। मेरे प्रश्न पर भगवान् मुस्करा पड़े। मैंने मान लिया कि तुम्हारे प्रेम के सिवा

मेरी दूसरी नियति नहीं है ।

विश्वामित्र : देवी उग्रा, मेरी सीमाएं हैं । मुझे क्षमा करो ।

उग्रा : आर्य विश्वामित्र, आचार्य भैरव ने मुझे आवश्यक शिक्षा दी है । मैं यज्ञ करना जानती हूं । मंत्रों से देवताओं का आवाहन कर सकती हूं । मैं एक आर्य पत्नी की तरह तुम्हें हर तरह से सुखी रखूंगी ।

विश्वामित्र : देवी, मुझे तुम्हारी विद्वता और चरित्र में विश्वास है । लेकिन मैं वर्ण की दीवार तोड़ने में असमर्थ हूं ।

उग्रा : आर्यपुत्र, अगर तुम एक असुर कन्या से विवाह नहीं कर सकते तो मुझे आर्य-धर्म में दीक्षित कर लो । तुम्हें कोई कठिनाई नहीं होगी ।

विश्वामित्र : देवी, अनार्य को आर्य-धर्म में दीक्षा नहीं दी जा सकती ।

उग्रा : लेकिन तुम्हारे आचार्यों ने 'विश्व को आर्य बनाओ' का मंत्र दिया है ।

विश्वामित्र : देवी, वह एक इच्छा मात्र है । आचार्यों ने इसके लिये कोई विधान नहीं बनाया है ।

उग्रा : आर्यपुत्र, मनुष्य सभी नियमों से बड़ा होता है । देवताओं ने मनुष्य को अपनी आकृति में बनाया है ।

विश्वामित्र : देवी, मैं विवश हूं । तूम्हारे प्रेम को अस्वीकार कर मुझे बहुत पीड़ा हो रही है ।

उग्रा : जानते हो, आर्य विश्वामित्र, एक असुर कन्या प्रेम के अस्वीकार पर बहुत हिंस्र हो जाती है । समाज में उसके अपमान की कोई सीमा नहीं रहती ।

विश्वामित्र : देवी, तुम्हारा दुःख देखकर मेरा हृदय क्षत-विक्षत हो रहा है ।

उग्रा : जिसे हृदय का सारा प्रेम अर्पित किया उसे अब घृणा नहीं

कर सकूंगी । मुझे अपना ही वलिदान करना होगा ।

विश्वामित्र : देवी, यह क्या कह रही हो ।

उग्रा : अगले मास की पूर्णिमा तक यदि मेरा प्रेम प्रतिफलित नहीं हुआ तो मैं भगवान् उग्रकाल के चरणों में अपना कटा हुआ सिर अर्पित करूंगी ।

(उग्रा का प्रस्थान)

विश्वामित्र : नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा । भगवान् उग्रकाल इसे कभी स्वीकार नहीं करेंगे ।

(पट परिवर्तन)

पहला अंक

चौथा दृश्य

पात्र

भैरव

तुग्र

शंबर

विश्वामित्र

ऋक्ष

उग्रा

सुरा

राजा दिवोदास

प्रतर्दन

लोपामुद्रा

पहला अंक

चौथा दृश्य

स्थान : वही

समय : रात्रि का पहला प्रहर

(भैरव भगवान् उग्रकाल की आरती कर रहा है। राजा शंबर चिन्तित से खड़े हैं)

(विश्वामित्र और ऋक्ष सूली से बंधे हैं)

(दूर से युद्ध वाद्य के स्वर)

भैरव : हे उग्रकाल, दुष्ट आर्यों ने शंबरपुर को चारों ओर से घेर लिया है। उन्होंने हमारा अन्न-जल रोक दिया है। हमारे नागरिक भूख-प्यास से नारकीय यंत्रणा झेल रहे हैं। हे देव इस कठिन परीक्षा में हमें उत्तीर्ण करो। खोल दो, अपना तीसरा नेत्र : धूर्त आर्यों की सारी सेना जल कर राख हो जाय।

(तुग्र का प्रवेश)

तुग्र : महाराज, आर्य सेनापति ने हमारे विरूद्ध अपनी पूरी शक्ति लगा दी है। अन्न और जल के अभाव में हाहाकार बढ़ता जा रहा है। हमें शीघ्र कुछ न कुछ निर्णय करना होगा।

शंबर : राजा दिवोदास के पास दूत भेजो। अगर आर्य सेना तत्काल वापस नहीं हुई तो हम कल राजवंदियों की बलि दे देंगे।

तुग्र : लेकिन राजन्, वंदी तो अवध्य होता है।

भैरव : चुप रहो ! कोई भी शत्रु अवध्य नहीं होता ! क्या सारे नियम-कानून सिर्फ असुर-जाति के लिये हैं । सुबह की प्रतीक्षा क्यों करते हो ! लो कुठार और इनका वध करो ! अगस्त को संदेश के रूप में इनके कटे हुए सिर भेजो !

शंबर : सुनो तुग्र , आर्य सेनापति को सूचित कर दो कि कल सुबह हम महाकाल की पूजा करेंगे । इस पूजन के बाद वंदियों की बलि दी जायगी !

तुग्र : ठीक है राजन् ! मैं राज दिवोदास के पास दूत भेजता हूं ।

शंबर : पुरोहित राज, महाकाल की पूजा का प्रबन्ध कीजिये । पुर के नागरिकों से कह दीजिये कि पूजन के समय उपस्थित रहें ।

भैरब : ठीक है, राजन !

(शंबर और तुग्र का प्रस्थान)

(नेपथ्य से घोषणा)

सुनो ! सुनो ! शंबरपुर के नागरिकों को सूचना दी जाती है कि कल सुबह महाराज महाकाल का पूजन करेंगे । पूजन के समय नागरिक अवश्य उपस्थित रहें ! सुनो-सुनो !

भैरव : नाचो महाकाल ! आज तुम फिर तांडव करो ! दसो दिशाओं में अपनी जटाओं को खुलकर बिखरने दो । खोल दो अपना रक्तिम नेत्र ! अपनी प्रलयंकारी मुद्रा से शत्रुओं को क्षार-क्षार कर दो !

(उग्रा और सुरा का प्रवेश)

उग्रा : पूज्यवर, सुना है कि कल महाकाल की पूजा होगी !

भैरव : हां देवी, महाराज ने कल विराट पूजन का आयोजन किया है ।

(भैरव का प्रस्थान)

उग्रा : महाकाल की पूजा ! यह क्या हो रहा है । इसमें तो नरबलि दी जाती है !

ऋक्ष : हां देवी, तुम्हारे पिता का ऐसा ही आदेश है । बलि के लिये हमारे सिरों को चढ़ाया जायगा ।

उग्रा : नहीं, यह कभी नहीं होगा ! मैं इतना अनिष्ट कभी नहीं होने दूंगी ।

ऋक्ष : नहीं देवी, इस महा अनिष्ट को भगवान् वरुण भी नहीं टाल सकते । देवी सुरा मदिरा का घड़ा लाओ । बचे हुए समय का यही सही उपयोग होगा ।

(सुरा का प्रस्थान)

(उग्रा भगवान् शंकर के सम्मुख खड़ी होती है)

उग्रा : भगवान् उग्रकाल, तुम सबके मन की गति जानते हो । दासी के मन की एकांत इच्छा तुमसे अपरिचित नहीं है। हे स्वयंभू, मन का सत्य सबसे बड़ा सत्य होता है । उससे बड़ा कुछ नहीं होता ।

हे परमेश्वर, तुम्हारी पुजारिन आज पहली बार कामना का पात्र लेकर खड़ी हुई है । उसकी कुंवारी इच्छा पूरी करो ।

(एक - दो क्षण के बाद)

हे देव, तुम्हारे मुख पर वही दैवी आलोक है । तुम मुस्करा रहे हो ।

अब कोई दुविधा नहीं है । अब कोई दुविधा नहीं है । उग्रा ने एक संकल्प ले लिया है । वह इसे अवश्य पूरा करेगी । वह इसे अवश्य पूरा करेगी ।

(उग्रा का प्रस्थान)

ऋक्ष : बंधुवर, असुरराज ने राजा दिवोद के पांस संदेश भेजा है। क्या यह संभव नहीं है कि दिवोदास हमारी रक्षा का प्रयत्न करे।

विश्वामित्र : नहीं ऋक्ष, यह दुर्ग बिलकुल अजेय है। बड़ा से बड़ा आक्रमण भी विफल हो जोयगा।

ऋक्ष : संभव है कि दिवोदास सुलह का प्रयत्न करे।

विश्वामित्र : इस सुलह से कोई लाभ नहीं है। आर्यों और असुरों का झगड़ा तय होने वाला नहीं है।

ऋक्ष : तूम विचित्र आदमी हो। तुम्हें तो जैसे प्राणों का कोई मोह ही नहीं है।

विश्वामित्र : मित्र, सब कुछ अपने चाहने से नहीं हो जाता।

ऋक्ष : नहीं-नहीं, मैं जीना चाहता हूं। अभी तो हमारे जीने के दिन शुरू ही हुए हैं।

विश्वामित्र : देखता हूं कि देवी सुरा ने तुम्हें जीने का नया मंत्र दिया है।

ऋक्ष : सुनो बंधु, अब भी समय है। देवी उग्रा को स्वीकार कर अपना जीवन धन्य करो।

विश्वामित्र : नहीं, यह बिल्कुल असंभव है।

ऋक्ष : जरूर संभव है। साधारण लोगों को छोड़ दो, अनेक ऋषियों ने भी असुर कन्याओं को उपपत्नी बनाकर रखा है।

विश्वामित्र : नहीं मित्र, अधर्म अनुकरणीय नहीं होता।

ऋक्ष : ये असुर लड़कियां बहुत भावुक प्रकृति की होती हैं। इनके शरीर से कमल की गंध आती है।

विश्वामित्र : ऋक्ष, कभी-कभी मैं सोचता हूं कि इस आर्य-अनार्य

समस्या का समाधान क्या है ।

ऋक्ष : यही तो मूल प्रश्न है । मैंने और सुरा ने इस प्रश्न का हल निकाल लिया है ।

विश्वामित्र : जानते हो ऋक्ष, कल रात्रि में मैं बहुत देर तक भगवान् शंकर की प्रतिमा को देखता रहा । अचानक मुझे उनके नेत्रों में देवी उग्रा का तेजस्वी मुख दिखाई पड़ा । उनके नेत्र में एक प्रश्न था लेकिन मेरे पास इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं है ।

ऋक्ष : विश्वामित्र, तुम एक वीर पुरूष हो । इस सवाल का सामना करने से क्यों डरते हो ।

विश्वामित्र : देवी उग्रा परम विदूषी हैं । उनके व्यक्तित्व में बहुत आकर्षण है । लेकिन महर्षि अगस्त क्या कहेंगे ! भगवान् वरुण क्या निर्णय लेंगे !

(तुरूही और दुंदुभि नाद । भगवान् वरुण का जयघोष)

ऋक्ष : तुमने सुना मित्र । असुरों की नगरी में भगवान् वरुण की जय जयकार कौन कर रहा है ।

विश्वामित्र : लगता है कि दिवोदास ने गढ़ पर आक्रमण कर दिया है ।

(भगवान वरुण की जय । असुरों को मारो-मारो की आवाज)

(दौड़ते हुए भैरव का प्रवेश)

भैरव : हे उग्रकाल, रक्षा करो, । किसी कुलघाती ने किले का द्वार खोल दिया है । पूरी आर्य सैना गढ़ के अंदर प्रवेश कर गयी है । सुनता हूं कि उन्होंने असुर राज शंबर और सैनापति तुग्र का वध कर दिंया है ।

हे करुणाकर, निर्दोष नागरिकों की हत्या से आकाश

कंपित हो रहा है। असुर जाति पर भयानक संकट आया है। रक्षा करो महाकाल, रक्षा करो।

(भैरव का प्रस्थान)

विश्वामित्र : असुरराज शंबर का वध हो गया। धर्म का विरोध करने वाले का ऐसा ही अंत होता है।

ऋक्ष : पता नहीं सुरा कहां है। उसके संबन्ध में मुझे घोर चिन्ता हो रही है।

(राजा दिवोदास, सैनापति प्रतर्दन और देवी लोपामुद्रा का प्रवेश)

दिवोदास : विश्वामित्र, हम आ गये। भगवान् वरुण की कृपा से हमारी विजय हुई है।

(प्रतर्दन और लोपामुद्रा वंदियों के बंधन खोलते हैं।

विश्वामित्र : राजा दिवोदास, तुम्हारे पराक्रम के सम्मुख असुर नहीं टिक सके। राजा शंबर की मृत्यु से आर्यों का सबसे बड़ा शत्रु समाप्त हो गया।

लोपामुद्रा : लेकिन राजन, इस विजय के पीछे सिर्फ हमारा पराक्रम नहीं था। एक असुर कन्या ने दुर्ग के द्वार को खोल दिया था।

दिवोदास : ये असुर ऐसे ही बुद्धिहीन होते हैं। उन्होंने स्वयं अपनी पराजय का प्रबन्ध किया है।

प्रतर्दन : महाराज, इस विजय से हमें अपार संपत्ति और अनगिनत दास-दासियां प्राप्त हुई हैं।

(पूजा की थाली के साथ उग्रा का प्रवेश)

दिवोदास : कौन है यह। कितनी सुन्दर लगती है।

प्रतर्दन : कोई भी हो, इसे वंदी बनाता हूं। यह विजय की सर्वोत्तम पुरस्कार होगी।

विश्वामित्र : सेनापति प्रतर्दन, यह दिवंगत राजा शंबर की पुत्री देवी

उग्रा है ।

दिवोदास : दिवंगता राजा शंबर की कन्या । चलो, उससे क्या फरक पड़ता है । लेकिन इसे पूजा कर लेने दो ।

उग्रा : हे उग्रकाल, तुमने मेरा पहला संकल्प पूरा किया है । आज अपना दूसरा वचन पूरा कर रही हूं । दिवंगत राज़ा शंबर की पुत्री उग्रा तुम्हारे चरणों में अपना जीवन अर्पित करती हैं ।

(उग्रा कटार निकालती है । विश्वामित्र दौड़कर उसकी कटार छीनते हैं)

विश्वामित्र : नहीं देवी, आत्महत्या पाप है !

उग्रा : आर्य विश्वामित्र मेरा यज्ञ पूरा होने दें ।

विश्वामित्र : नहीं देवी, भगवान् शंकर इसे कभी स्वीकार नहीं करेंगे ।

दिवोदास : पिता की मृत्यु ने इसे बिलकुल असंतुलित कर दिया है ।

लोपामुद्रा : मेरा अनुमान है कि इसी लड़की ने दुर्ग के द्वार को खोला था । सुनती हूं कि इस कार्य के मूल में कोई प्रेम संबन्ध है ।

दिवोदास : यह एक सुयोग्य दासी सिद्ध होगी । प्रतर्दन, इसे वंदी बनाओ ।

(प्रतर्दन आगे बड़ता है)

विश्वामित्र : नहीं, इसे कोई स्पर्श नहीं कर सकता ।

दिवोदास : लैकिन क्यों ?

विश्वामित्र : क्योंकि, यह मेरी वाग्दत्ता हैं । भगवान् शंकर को साक्षी मानकर हमने एक-दूसरे को स्वीकार किया है ।

उग्रा : आर्य विश्वामित्र, यह आप क्या कह रहे हैं ।

विश्वामित्र : देवी, प्रेम सबसे बड़ा होता है । प्रेम ने हम दोनों को मुक्त कर दिया है ।

दिवोदास : लेकिन विश्वामित्र, तुम क्या एक अनार्य कन्या से विवाह करोगे ?

विश्वामित्र : सब ईश्वर की इच्छा है । इस सम्बन्ध की रचना स्वयं भगवान् शंकर ने की है ।

दिवोदास : चलो लोपामुद्रा, चलें । वंदी जीवन के कष्टों ने आर्य विश्वामित्र को बिलकुल विचारहीन बना दिया है ।

(दिवोदास, लोपामुद्रा और प्रतर्दन का प्रस्थान)

ऋक्ष : मैं भी जाता हूं, मित्र । सुरा का पता लगाना होगा ।

(ऋक्ष का प्रस्थान)

विश्वामित्र : देवी भगवान् शंकर की कृपा से हमने एक-दूसरे को पहचाना है । चलो हम भगवान् की वंदना करें ।

उग्रा : चलो, आर्यपुत्र ।

(दोनो साथ-साथ वंदना करते हैं)

वंदना : ओम् नंमः शिवाय ।
ओम् नमः शिवाय ।
ओम् नमः शिवाय ।

(पट परिवर्तन)

दूसरा अंक

पांचवां दृश्य

(१) अगस्त

(२) लोपामुद्रा

(३) दिवोदास

दूसरा अंक

पांचवां दृश्य

स्थान : आर्यों का सभागार। एक कोने में झोपड़ी का अंश और यज्ञ कुंड। बीच में सभागार का वाह्य-भाग।

समय : सुबह आठ बजे।

(अगस्त मुनि यज्ञ कुंड की अग्नि मे समिधा डाल रहे हैं।

ओम् विष्णुए नमः स्वाहा !

ओम् वरुणाय नमः स्वाहा !

ओम् सूर्याय नमः स्वाहा !

(लोपामुद्रा का प्रवेश)

अगस्त : देवी लोपामुद्रा, सब मंगल है न।

लोपामुद्रा : मुनिवर, भगवान् वरुण की कृपा से आर्य सेना को विजय मिली है।

अगस्त : देवी, इस विजय के पीछे सिर्फ हमारी सेना का शौर्य नहीं है। सुनता हूं कि एक असुर कन्या ने दुर्ग के द्वार को खोल दिया था।

लोपामुद्रा : जहां बल असमर्थ हो वहां छल से काम चलता है। यदि थोड़ा भी विलम्ब हो जाता तो आर्य विश्वामित्र और ऋक्ष की मृत्यु निश्चित थी।

अगस्त : इस छल-युद्ध में आर्य विश्वामित्र नहीं, असुर कन्या की विजय हुई है।

लोपामुद्रा : यह आप क्या कह रहे हैं।

अगस्त : सुना है कि आर्य विश्वामित्र ने असुर कन्या को विवाह का वचन दिया है ।

लोपामुद्रा : यह असुर कन्या दिवंगत राजा शंबर की पुत्री है । सुनती हूं कि वह परम विदूषी है ।

अगस्त : देवी, असुर हमारी प्रशंसा के पात्र नहीं हो सकते ।

लोपामुद्रा : असुर कन्या उग्रा आर्य विश्वामित्र को हृदय से प्रेम करती है । प्रेम के आग्रह पर ही उसने दुर्ग के द्वार को खोला था ।

अगस्त : वह साहस नहीं, दुस्साहस था । वह प्रेम नहीं, वासना का उन्माद था ।

लोपामुद्रा : लेकिन मुनिवर, आर्य मनीषियों ने गंधर्व विवाह को स्वीकृति दी है ।

अगस्त : यह असंभव है । आर्यों और अनार्यों के बीच किसी तरह का वैवाहिक संबन्ध वर्जित है ।

लोपामुद्रा : मुनिवर, आर्य विश्वामित्र और देवी उग्रा ने एक दूसरे को स्वीकार कर लिया है । वे आपकी सहानुभूति के पात्र हैं ।

अगस्त : अधर्म के साथ किस तरह की सहानुभूति हो सकती है । इस धर्म की रक्षा के लिये आर्यों ने हजारों लड़ाइयां लड़ी हैं ।

लोपामुद्रा : कोई भी धर्म एक पवित्र मानवीय संबन्ध कैसे अस्वीकार कर सकता है ।

अगस्त : इस संबन्ध में किसी तरह की पवित्रता नहीं है । इसको स्वीकार करने से समाज नष्ट हो जाएगा ।

लोपामुद्रा : मुनिवर, कितने ही आर्य नागरिकों ने असुर कन्याओं से विवाह किया है ।

अगस्त : एक अधर्म से दूसरे अधर्म का औचित्य सिद्ध नहीं होता।

लोपामुद्रा : समाज में आर्य-असुर संबन्ध बढ़ते जा रहे हैं। क्या केवल आंख बंद कर लेने से इस समस्या का हल हो जायगा।

अगस्त : देवी लोपामुद्रा, इस विषय पर इतना आवेश अनुचित है।

लोपामुद्रा : हरेक परिवार में वर्णसंकर पुत्र हैं। आज इनके अस्तित्व का प्रश्न है। कल इनके अधिकारों का सवाल उठेगा। इस समस्या के सामने धर्म की दीवार चूरचूर हो जायगी।

अगस्त : आर्य ऋषियों ने धर्म-अधर्म का क्षेत्र तय कर दिया है। हजारों तूफान इन प्राचीरों को नहीं तोड़ सके है। धर्म का दिया हमेशा जलता रहेगा। (लोपामुद्रा का प्रस्थान)

(राजा दिवोदास और प्रतर्दन का प्रवेश)

अगस्त : आओ राजन, आर्य सेना की विजय हुई है। हमारा महान शत्रु शंबर नष्ट हो गया।

दिवोदास : पता नहीं, यह विजय है या पराजय। असुर राज शंबर का नाश हो गया पर शंबर कन्या राजरानी बन कर आ रही है। कल एक असुरपुत्र आर्य जनपद पर शासन करेगा।

अगस्त : नहीं राजन्, इस प्रस्ताव पर इतना दुख व्यर्थ है। हम इस अन्याय को कभी स्वीकार नहीं करेंगे।

दिवोदास : राजा विश्वामित्र के तन-मन पर असुर सुन्दरी छा गयी है।

अगस्त : यह उसके मानसिक पतन का लक्षण है।

दिवोदास : सुनिये मुनिवर, आर्य विश्वामित्र भरत कुल में अग्रगण्य हो सकते हैं पर हमारा योगदान भी कम नहीं है। अगर इस राज्य में धर्म की उपेक्षा हुई तो हम आर्य-संघ से अलग हो जायेंगे।

अगस्त : नहीं राजन्, ऐसा कभी नहीं होगा। आर्य जाति की नीं वर्णाश्रम धर्म पर टिकी हुई है। मेरे जीते जी धर्म क मर्यादा कभी खंडित नहीं होगी।

(पट परिवर्तन,

दूसरा अंक

छठा दृश्य

(१) वृक
(२) प्रतीप
(३) मघवन
(४) प्रतर्दन
(५) कोषपाल
(६) दो प्रतिहारी
(७) सुरा
(८) मयूरा
(९) मेघा
(१०) ऋक्ष
(११) विश्वामित्र
(१२) लोपामुद्रा

दूसरा अंक

छठा दृश्य

स्थान : वही

समय : कुछ दिन बाद

(वृक और प्रतीप–दो आर्य नागरिक अलग-अलग शिलाओं पर उंघ रहे हैं)

वृक : प्रतीप !

प्रतीप : बोलो वृक !

वृक : ऊंघ रहे हो !

प्रतीप : तुम भी तो नाक बजा रहे हो ।

वृक : सोम रस पीकर आये हो न ।

प्रतीप : सोम रस तो ऋषि-मुनि पोते हैं । अपने को तो मदिरा का पूरा घड़ा चाहिये ।

वृक : यह बहुत बुरी बात है । तुम तो पूरे पियक्कड़ जान पड़ते हो !

प्रतीप : अच्छा, तो तुम बगुला भगत बनना चाहते हो !

वृक : नहीं, बगुला भगत कौन बनता है । मैं शुभ कार्य के बाद मदिरा पान करता हूं । साथ ही भगवान् अरुण की जय-जयकार करता हूं ।

प्रतीप : भगवान् अरुण नहीं, भगवान् वरुण बोलो ।

वृक : अरे हां, भगवान् वरुण ! जय हो भगवान् वरुण की !

प्रतीप – लेकिन मित्र, मदिरा मैंने पी है। नशा तुमको हो रहा है।

वृक : देखो भाई, तुमसे-झूठ नहीं बोलूंगा। मैं असुर मदिरा पीता हूं। असुर शब्द में ही नशा है–असुर मदिरा, कन्या !

प्रतीप : बस-बस ! भगवान् वरुण दया करें ! हमें तो असुर वंश में ही जन्म लेना था।

वृक : चुप रहो ! कहीं आचार्य अगस्त ने सुन लिया तो श्राप दे देंगे।

प्रतीप : आचार्य अगस्त ! जय हो आचार्य की।

वृक : प्रतीप, आचार्य अगस्त कहते हैं– तप करो, साधना करो। तप करो, साधना करो !

प्रतीप : आचार्य ने सचमुच तप किया है। बुढ़ापे में देवी लोपामुद्रा से विवाह कर लिया ! इससे बड़ा तप क्या होगा !

(दोनों हंसते हैं)

वृक : प्रतीप, मुझसे तप नहीं होता। नाक बंद करते ही छींक आती है।

(वृक जोर से छींकता है)

प्रतीप : वृक, ये असुर लड़किया केश रचना में बहुत प्रवीण होती हैं। हमारी तपस्या को तुरंत अपने जूड़े में बांध लेती हैं। (दोनों हंसते हैं)

वृक : ठीक कहते हो ! इन असुर कन्याओं के सामने आर्य स्त्रियां बिलकुल फीकी लगती हैं।

प्रतीप : चुप रह ! चुप रह ! कहीं जटाजूट वाले ने सुन लिया तो श्राप दे देगा।

वृक : नहीं - नहीं, मैंने कुछ थोड़े ही कहा है।

प्रतीप : वृक, हम किसका इंतजार कर रे हैं।

वृक : हां - हां, यही तो बात है। लेकिन तुम भारी मूर्ख हो।

यहां तीसरे पहर असुर कन्याओं की हाट लगने वाली है। मेरी पत्नी ने एक असुर कन्या खरीद कर लाने को कहा है।

प्रतीप : वृक, ये असुर कन्याएं बहुत मोहक होती हैं।

वृक : हां - हां, बहुत मोहक होती हैं। पत्नी की सेवा करते-करते हमारी सेवा करने लगती है।

प्रतीप : फिर वहीं, तुम सीधे नरक जाना चाहते हो।

वृक : प्रतीप, लगता है कि हम समय से पहले आ गये। अभी तक न विक्रेताा आये, न असुर लड़कियां। सारा मामला बिलकुल ठंडा-ठंडा लग रहा है।

प्रतीप : लड़कियों का नीलाम तीसरे प्रहर है। अभी तो पूरा प्रहर बाकी है।

वृक : सुनता हूं कि इस बार शंबर की लड़कियां बिक रही हैं। एक से एक सुन्दर हैं।

प्रतीप : शंबर की बड़ी लड़की उग्रा ने तो राजा विश्वामित्र को फांस लिया है।

वृक : आचार्य इस प्रस्ताव का विरोध कर रहे हैं।

प्रतीप : हां, असुर कन्या कैसे राजरानी बन सकती है।

वृक : भई, राजा का मामला है।

प्रतीप : तुम रह गये मूरख के मूरख। राजा धर्म का नियम थोड़े ही बदल सकता है।

वृक : क्या कहते हो। आचार्य चाहें तो कुछ भी कर सकते हैं।

प्रतीप : लोगों का कहना है कि विवाद के भीतर राजनीति का चूहा घुस गया है।

वृक : राजा विश्वामित्र भी पूरा पागल है। अरे असुर कन्या को दासी बनाकर रख लेता, कोई पूछता है।

प्रतीप : अपना राजा बड़ा विद्रोही और विचारक है। ऐसे लोग न स्वयं चैन से बैठते हैं, न दूसरों को बैठने देते हैं।

वृक : बहुत देर हो गयी। नशा टूट रहा है।

प्रतीप : राजभवन का घंटा बजा है। अब देर नहीं है।

(नेपथ्य में शोर)

वृक : पता नहीं, कैसा शोर हो रहा है।

प्रतीप : असुर हार गये हैं। लोग खुलकर हंस रहे हैं।

वृक : वह देखो वणिक राज मघवन आ रहा है। लगता है कि वह भी नीलाम में शामिल होगा।

प्रतीप : मर गये। मघवन के पास बहुत धन है। वह हमें जरूर पछाड़ देगा।

(मघवन का प्रवेश)

मघवन : वणिक मघवन सबका अभिनन्दन करता है।

वृक : वणिकराज, राज मार्ग पर बहुत शोर हो रहा है। सब कुशल है न ?

मघवन : राजा विश्वामित्र असुर कन्या के साथ नगर विहार के लिये निकले हैं। इस दृश्य ने नागरिकों को उत्तेजित कर दिया है।

प्रतीप : लगता है कि अब आर्य आपस में जम कर लड़ेंगे। (सेनापति प्रतर्दन, कोषपाल एवं दो प्रतिहारियों के बीच सुरा, मयूरा और मेघा का प्रवेश)

प्रतर्दन : सुनो, सुनो। पिछले युद्ध में ये कन्याएं वंदिनी बनाकर लायी गयी थीं। आज इनका सार्वजनिक विक्रय किया जा रहा है। अधिक से अधिक मूल्य देने वाले को ये कन्याएं प्राप्त होंगी।

(प्रतर्दन का प्रस्थान)

कोषपाल : सेनापति की आज्ञा से दो असुर कन्याओं को विक्रय के लिये प्रस्तुत किया जा रहा है ।
ये कन्याएं दिवंगत असुर सेनापति तुग्र की पुत्रियां मथूरा और मेघा हैं ।

वृक : अहा, कैसा रूप है । मैं ऐसी ही कन्याएं खरीदना चाहता हूं ।

प्रतीप : मेरी पत्नी को भी ऐसी ही दासी चाहिये ।

कोषपाल : श्रेष्ठिजन, इन अपूर्व कन्याओं के लिये उचित मूल्य घोषित करें ।

वृक : मैं इनके लिये दस गौएं दूंगा ।

प्रतीप : भला दस भी कोई गिनती हैं । मैं इन कन्याओं के लिये बीस गौएं दूंगा ।

वृक : देखो, मित्र, मेरा मुकाबला मत करो । मैं तीस गौएं देने को प्रस्तुत हूं ।

प्रतीप : वृक, मैंने तुम्हें हर मल्लयुद्ध में पछाड़ा है । तुम तीस तो मैं पचास ।

वृक : देखो प्रतीप, मेरा नशा ऐसे ही टूट चुका है । उसे और मत तोड़ो । कोषपाल महोदय, मैं इन कन्याओं के लिये एक सौ गौएं दूंगा ।

प्रतीप : एक सौ गौएं । कौन कहता है कि तुम्हारा नशा टूट चुका है ।

कोषपाल : वणिक राज मघवन, आप बिलकुल मौन हैं ।

मघवन : नहीं मान्यवर, मैं इस असुर कन्याओं के लिये उत्सुक नहीं हूं । मैं एक राजकन्या खरीदना चाहता हूं ।

कोषपाल : तब यह सौदा तय हो गया ।

वृक : मैं कल संध्या तक एक सौ गौएं गौशाला में पहुंचा दूंगा ।

चलो असुर कन्याओं ।

मयूरा : मैं इस विक्रय का विरेध करती हूं ।

मेघा : यह घोर अन्याय है ।

कोषपाल : चुप रहो । तुम्हें विरोध करने का कोई अधिकार नहीं है ।

मयूरा : क्या कहते हो । यह सब असु : जाति का अपमान है ।

मेघा : मैं इस व्यवस्था को चुनौती ः ती हूं ।

कोषपाल : असुर कन्याओं, तुम इस व्यवस्था को चुनौती नहीं दे सकतीं । तुम्हें अब सिर्फ दासी बनने का अधिकार है । तुम अब मात्र दासी हो ।

वृक : चलो दासियों ।

(वृक मयूरा एवं मेघा को खींचते हुए ले जाता है)

कोषपाल : आर्य नागरिको अव असुर सौन्दर्य की अपूर्व प्रतिमा, दिवंगत राजा शंबर की पुत्री सुरा विक्रय के लिये प्रस्तुत है ।

मघवन : मान्यवर, इस सुन्दर कन्या को मैं खरीदूंगा । मुझे यह बहुत पसंद है ।

प्रतीप : वणिकराज, मैं तुमसे लड़ कर अपना घर नहीं वेचूंगा । मैं जा रहा हूं ।

(प्रतीप का प्रस्थान । ऋक्ष का प्रवेश)

सुरा : ऋक्ष, तुम ।

ऋक्ष : हां, सुरा, मैं आ गया ।

सुरा : ऋक्ष, युद्ध में पिता की मृत्यु हो गयी । परिवार छिन्न भिन्न हो गया । एक दासी के रूप में मैं विक्रय के लिए खड़ी की गई हूँ ।

ऋक्ष : सुरा, यह हमारे लिए परीक्षा की घडी है ।

सुरा : ऋक्ष, शंबर की कन्या इतना अपमानित होगी—कौन कह सकता था। क्या आर्य लोग अपने वंदियों के साथ ऐसा ही व्यवहार करते हैं।

ऋक्ष : सुरा, एक भयानक तूफान के कारण सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया है। मैं स्वयं भटक रहा हूं।

कोषपाल : नागरिकों, राज्य के नियमों के अनुसार कुमारी सुरा विक्रय के लिये प्रस्तुत है।

ऋक्ष : मान्यवर, मैं कुमारी सुरा को पाने के लिये अपनी पूरी संपत्ति लगा देने के लिये तैयार हूं।

सुरा : ऋक्ष, क्या तुम मुझे मूल्य देकर खरीदोगे ?

ऋक्ष : सुरा, तुम्हें पाने के लिये यही सबसे सुगम मार्ग है।

सुरा : ऋक्ष, मैं तुम्हारी पत्नी हूं। भगवन् शंकर को साक्षी मानकर हम दोनो ने विवाह की शपथ ली थी।

ऋक्ष : सुरा, अचार्य अगस्त ने हमारे संबन्ध को अस्वीकार कर दिया है।

कोषपाल : बंधुओ, असुर राज की कन्या विक्रय के लिये प्रस्तुत है।

मघवन : मान्यवर, मैं इस राजकन्या के लिये एक सौ गौएं दूंगा।

ऋक्ष : मैं शंबर कन्या के लिये दो सौ गौएं देने को प्रस्तुत हूं।

कोषपाल : वणिकराज मघवन, राज विदूषक ने परिहास किया है। आप इसका उचित उत्तर दीजिये।

मघवन : मैं इस सुकेशी कन्या के लिये तीन सौ गौएं दूंगा।

ऋक्ष : कोषपाल, में राजकुमारी सुरा के लिये पांच सौ गौएं दूंगा।

मघवन : विदूषक राज, तुमने शेर के जैसी छलांग ली है। फिर भी मैं आगे बढ़कर सात सौ गौएं दाव पर लगाता हूं।

ऋक्ष : नहीं, मैं हार नहीं मानूंगा। मैं असुर कन्या के लिये अपनी पूरी गौशाला - एक हजार गौएं देने की घोषणा करता हूं।

कोषपाल : एक हजार गौएं। धन्य हैं। वणिकराज, अब पासा तुम्हारे हाथ में है।

मघवन : मान्यवर, मैं एक वणिक हूं। मूल्य अधिक हो गया। मैं अब आगे बोली नहीं बोलूंगा।

सुरा : नहीं, यह नहीं हो सकता। मैं इस सौदे का विरोध करती हूं।

कोषपाल : असुर कन्या, तुम वदिनी हो। इसमें तुम्हारी इच्छा - अनिच्छा का कोई सवाल नहीं है।

सुरा : ठीक है ! वाणिकराज, में तुमसे एक प्रश्न पूछती हूँ। तुमने मुझे पसंद किया है। अब पीछे क्यों हटते हो।

ऋक्ष : सुरा, यह क्या कह रही हो।

सुरा : जुआरी एक पूरा दांव हार चुका है। वह एक दूसरा पासा आजमाना चाहता है।

मघवन : मान्यवर कोषपाल, यह सौदा मैं लूंगा। राज विदूषक जो भी मूल्य दें, मैं उससे एक हजार मुद्रा अधिक दूंगा।

ऋक्ष : वणिक राज, यह अन्याय है। धन के बल पर तुम अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित करना चहते हो।

सुरा : ऋक्ष, यह तो अपने सामर्थ की बात है। शक्तिहो तो आगे बढ़ो।

ऋक्ष : सुरा, तुमको क्या हो गया है।

(विश्वामित्र का प्रवेश)

सुरा : ऋक्ष, भगवान् शंकर के सम्मुख हमने तुमने विवाह की शपथ ली थी। तुममें साहस नहीं कि तुम लोगों से खुलकर कह सको कि सुरा मेरी पत्नी है। तुममें साहस नहीं है कि तुम उस अन्याय का विरोध कर सको जो आदमी को पशुओं सा हाट में बेच रहा है।

तुममें साहस नहीं है कि तुम उस व्यवस्था के विरूद्ध आवाज उठा सको जो भोले-भाले धरती के पुत्रों पर भयानक अत्याचार कर रहा है।
ऋक्ष, अगर मुझे दासी ही बनना है तो इस बात से क्या अंतर पड़ता है कि मैं किसकी दासी बनती हूं।

ऋक्ष : नहीं सुरा, यह सच नहीं है।

सुरा : चलो वणिक राज,

(विश्वामित्र आगे बढ़ते हैं)

विश्वामित्र : ठहरो, देवी सुरा। तुम्हारे साथ अन्याय हुआ है। मैं इस अन्याय का निराकरण करूंगा।

सुरा : आर्य विश्वामित्र।

विश्वामित्र : कोषपाल, यह लड़की निर्दोष हैं। इसे सभी बंधनों से मुक्त करो।

(प्रतर्दन का प्रवेश)

प्रतर्दन : राजन्, यह कन्या निर्दोष हो सकती है पर इसका पिता शंबर निर्दोष नहीं था। वह आर्यों का भयानक शत्रु था। ये लड़कियां युद्ध में वंदी बनाकर लाई गयी हैं। इनका विक्रय सभी तरह से उचित है।

मघवन : राजन्, मैं वणिक मघवन हूं। मैंने असुर राजकुमारी को सबसे ऊंचा मूल्य देकर खरीदा है। अगर इसे मुक्त किया गया तो यह अन्याय होगा।

विश्वामित्र : राजकुमारी सुरा ने सखा ऋक्ष का वरण किया है। दासी के रूप में इनका विक्रय अनुचित है।

मघवन : राजकुमारीसुरा असुर कन्या है। आर्य और अनार्य के बीच वैवाहिक संबन्ध अनुचित है।

विश्वामित्र : प्रेम एक स्वर्गीय अनुभूति होती है। दो युवा हृदयों के

बीच इस पावन सूत्र की रचना स्वयं देवताओं ने की है। यह पाप कैसे हो सकता है।

मघवन : राजन्, उग्रा के प्रति आपके मोह से राज्यकार्य में बाधा पहुंच रही है। आप एक व्यवस्था के संरक्षक हैं। आपको धर्म के लिये भावनाओं का वलिदान करना होगा।

विश्वामित्र : मैं अपना कर्तव्य जानता हूं। कभी-कभी ईस्वरीय नियमों और मनुष्य के कानूनों में संघर्ष हो जाता है। सेनापति प्रतर्दन, मेरा आदेश है कि राजकुमारी सुरा को सम्मान के साथ मुक्त कर दिया जाय।

मघवन : राजन्, धर्म के नियम सबके लिये समान हैं। आपके निरंकुश आचरण से समाज में अराजकता फैल जायगी।

प्रतर्दन : महाराज, आपका आदेश धर्म के विरूद्ध हैं। आर्य सेना इस आदेश को कभी स्वीकार नहीं करेगी।

विश्वामित्र : सेनापति प्रर्तदन, आपके व्यवहार में अवज्ञ की गंध है।

मघवन : राजन्, सुरा का प्रश्न मूल प्रश्न नहीं है। स्वयं आर्य ऋक्ष ने भी विवाह की बात नहीं कही है। पर उग्रा के प्रश्न ने पूरे जनपद को क्षोभ से भर दिया है।

विश्वामित्र : राजकुमारी उग्रा का प्रश्न मेरा व्यक्तिगत प्रश्न है। उस पर सार्वजनिक विवाद अनावश्यक और अनुचित होगा।

प्रतर्दन : राजन्, एक आर्य राजा का जीवन उसका निजी जीवन नहीं होता। राजा के लिये कानून में कोई छूट नहीं है।

विश्वामित्र : अगर यही सच है तो में अपना मुकुट लौटा रहा हूं। यह राजपद मेरी आत्मा पर गहरा वोझ बन गया है।

(लोपामुद्रा का प्रवेश)

लोपामुद्रा : आर्य विश्वामित्र, राजपद छोड़ देने से ही उग्रा की समस्या का समाधान नहीं होगा। आर्य अनार्य संबन्ध सभी

स्थितियों में वर्जित हैं ।

विश्वामित्र : देवी लोपामुद्रा, यह आप क्या कह रही है ।

लोपामुद्रा : आर्य विश्वामित्र, तुम्हारे असंगत आचरण ने आचार्य को बहुत क्षुब्ध कर दिया है । उनका आदेश है कि उग्रा के साथ वैसा ही व्यवहार हो जैसा दूसरी असुर कन्याओं के साथ हुआ है । उग्रा को भी एक दासी की तरह हाट में बिंकना होगा ।

विश्वामित्र : यह कैसे संभव है । राजकुमारी उग्रा मेरी पत्नी है ।

लोपामुद्रा : आचार्य का आदेश है कि अगर कल सुबह तक उग्रा को विक्रय के लिये नहीं प्रस्तुत किया गया तो आचार्य राज्य पुरोहित का पद छोड़ देंगे ।

मघवन : सर्वनाश । आचार्य पुरोहित पद छोड़ देंगे । तब तो समाज में घोर अराज़कता फैल जायगी ।

प्रतर्दन : नहीं, यह असंभव है । आचार्य ने आर्य जाति को एक सूत्र में जोड़ा है । उनके हटने से आर्यों का संघ छिन्न-भिन्न हो गायगा ।

मघवन : नहीं, यह कभी नहीं होगा । आर्य जनपद के लोग आचार्य को कभी अपमानित नहीं होने देंगे ।

विश्वामित्र : देवी लोपामुद्रा, आचार्य का आदेश बहुत कठोर है । उनसे कहो कि अपना शाप लोटा लें ।

सुरा : चलो वणिक राज, धर्म की पताका नहीं झुकनी चाहिये । चंद असुर कन्याओं की बलि से धरती नहीं डोलेगी । आकाश कंपित नहीं होगा । कहीं कुछ नहीं होगा । कहीं कुछ नहीं होगा ।

(सुरा के साथ मघवन का प्रस्थान)

दूसरा अंक

सातवां दृश्य

(१) विश्वामित्र

(२) उग्रा

(३) प्रतिहारी

दूसरा अंक

सातवां दृश्य

स्थान : वही

समय : रात्रि का पहला प्रहर

(विश्वामित्र अकेले टहल रहे हैं)

(उग्रा का प्रवेश)

विश्वामित्र : देवी उग्रा ! भरतकुल की राजवधू राजमार्ग पर ! स्वागत करता हूं ।

उग्रा : राजन् लगता है कि सभी राजवधुएं कहीं न कहीं, बहुत अकेली होती हैं । उनका एकांत उन्हें भीतर ही भीतर बहुत जर्जर कर देता है ।

विश्वामित्र : देवी, एक राजा का जीवन कई टुकड़ों में बंटा होता है । उसकी अपनी विवशताएं होती हैं । राजवधू का आक्षेप उचित है ।

उग्रा : आर्यपुत्र, शंबरपुर के जंगलों में भटकते हुए भी मुझे एक सहज स्नेह का बोध होता था । यहां सैकड़ों दासियों के बीच भी लगता है कि मैं जंगल में हूं। एक भयभीत हिरनी सी अकेली भटक रही हूं ।

विश्वामित्र : देवी, यज्ञशाला में अनेक ऋषि-पत्नियों का साहचर्य संभव

हैं । इस संपर्क से आपको सुख मिलेगा ।

उग्रा : आर्यवर, इन ऋषि-पत्नियों के मन में पूर्वाग्रह का काला विष हैं । ये बहुत मीठे शब्दों का प्रयोग करती हैं पर इनके चेहरे भीतरी घृणा से सुलगते रहते हैं ।

विश्वामित्र : देवी, इस नगर से आपका परिचय नहीं हो सका है । धीरे-धीरे सब ठीक हो जायगा ।

उग्रा : मेरे पिता का जीवन एक योद्धा का जीवन था । हम लोगों ने बचपन से सुख और दूःख का अलग-अलग चेहरा देखा है । लेकिन इस नगर में दुःख-सुख की अनोखी गोधूली हैं – कहीं कुछ पकड़ में नहीं आता ।

विश्वामित्र : देवी, पूरा सुख तो सिर्फ कविताओं में ही संभव है ।

उग्रा : आज संध्या के आकाश में बहुत सुन्द चांदनी खिली हुई थी । शंबरपुर के बाद पहली बार मैंने इतना बड़ा चांद देखा । मेरे मन में एक कविता ने जन्म लिया... नहीं सुख भी सच होता है । लेकिन अनायास आकाश घिर गया । काली-काली डाइने दौड़कर चांद को निगल गयीं । बिलकुल अंधकार छा गया । कहीं प्रकाश की कोई किरण नहीं । मैं फूट-फूट कर रोने लगी ।

विश्वामित्र : देवी, अकारण डर गयी हैं । इन्हीं काले मेघों से खेतों में अमृत की वर्षा होती है ।

उग्रा : मुझे लगा कि इन काले मेघों का चेहरा परिचित है । वह आचार्य भैरव का चेहरा था ।

विश्वामित्र : असुर पुरोहित भैरव, वह हमारा क्या कर सकता है । देवी, एक दिवास्वप्न ने तुम्हें बहुत डरा दिया है ।

उग्रा : नहीं आर्यपुत्र, हमारे छोटे से संसार पर एक काला ग्रह मंडरा रहा है। आकाश में भयानक आवाजें चक्कर काट रही हैं। किसी दिन एक बदली आकाश को जकड़ लेगी और प्रकाश का दम घुट जाएगा।

विश्वामित्र : नहीं उग्रा, ऐसा कभी नहीं होगा।

उग्रा : पता नहीं, सुरा कहां है। एक दासी के अनुसर सुरा के साथ बहुत दुर्व्यवहार हुआ है।

विश्वामित्र : देवी, दासियों के संवाद विश्वसनीय नहीं होते।

उग्रा : आर्य ऋक्ष भी न जाने कहां लुप्त हो गये।

विश्वामित्र : आर्य ऋक्ष राजकार्य से बाहर गये हैं। लोटने पर वे स्वयं देवी का दर्शन करेंगे।

उग्रा : पता नहीं, मन बड़ा चिन्ताकुल है, कहीं चैन नहीं हैं।

विश्वामित्र : जाओ देवी, महल के रक्षक बहुत चिन्तित हो रहे होंगे। मैं भी नगर की परिक्रमा कर जल्दी ही लौटूंगा।

(उग्रा का प्रस्थान)

विश्वामित्र : (आत्मालाप) देवी उग्रा ठीक कहती हैं ... हमारे छोटे से संसार पर एक काला ग्रह मंडरा रहा है... काली-काली बदलियां चांद को निगल गयी हैं ... अरे। आसमान के तारों को किसने बुझा दिया ... आसमान के तारों को किसने बुझा दिया ...।

नहीं-नहीं, मैं इतना अंधकार नहीं झेल सकता। इतना अंधकार नहीं झेल सकता ...।

सुनो-सुनो, नरक के देवताओ सुनो।

मुझसे मेरा प्रकाश मत छीनो ।

मुझसे मेरा विश्वास मत छीनो ।

(प्रतिहारी का प्रवेश)

विश्वामित्र : मैं हूं, विश्वामित्र ।

प्रतिहारी : राजन् आप । क्षमा चाहता हूं । लेकिन महाराज, शंबर की मृत्यु के बाद बाहरी शत्रुओं का कोई भय नहीं रह गया है ।

विश्वामित्र : प्रतिहारी, सुरक्षा के लिये सतर्कता जरूरी होती है ।

प्रतिहारी : राजन्, कहते हुए संकोच होता हैं ।

विश्वामित्र : नहीं, खुलकर कहो, प्रतिहारी ।

प्रतिहारी : आर्य-श्रेष्ठ, बाहरी शत्रु तो समाप्त हो गये पर देश में विवाद का घुन लग गया है । हरेक परिवार दो टुकड़ों में बंट गया है ।

विश्वामित्र : जरा स्पष्ट करो, प्रतिहारी ।

प्रतिहारी : रानी उग्रा के सवाल ने पूरे जनपद को विभाजित कर दिया है । आचार्य अगस्त कहते हैं कि एक आर्य राजा एक अनार्य कन्या से कैसे विवाह कर सकता है ।

विश्वामित्र : लोगों का क्या विचार है ?

प्रतिहारी : श्रेष्ठि जन कई टुकड़ों में बंटे हुए हैं । आम जनता आप से सहानुभूति रखती है । पर आचार्य का कौन विरोध कर कता है ।

(चीत्कार की ध्वनि)

विश्वामित्र : यह कैसा चीत्कार है ?

प्रतिहारी : वंदीगृह से कुछ असुर युवक भाग गये हैं। सेनापति प्रतर्दन ने शेष वंदियों को कठोर दंड देने का आदेश दिया है।

विश्वामित्र : लेकिन यह तो अन्याय है। एक व्यक्ति के दोष के लिये दूसरे को कैसे दंडित किया जा सकता है।

प्रतिहारी : राजन्, यह आर्य-अनार्य समस्या देश को आमूल नष्ट कर रही है। अच्छा हो कि सभी असुरों का सामूहिक वध कर दिया जाय।

विश्वामित्र : यह एक असंभव विचार है। जंगली पशु भी अपने शिकार का अकारण वध नहीं करते।

प्रतिहारी : अगर हम असुरों का वध नहीं कर सकते तो हमें इन्हें समाज में सम्मान का स्थान देना होगा। तीसरा कोई विकल्प नहीं है।

(नेपथ्य से) यह हत्या नहीं, आत्महत्या है।

विश्वामित्र : यह कैसा कोलाहल है। लगता है कि कोई मर गया है।

प्रतिहारी : आपने नहीं सुना। राजा शंबर की पुत्री सुरा ने आत्महत्या कर लिया है। उसने बहुत परिश्रम से शंकर की मूर्ति को गढ़ा। संध्या समय उसने अपना सिर काटकर असुर देवता को अर्पित कर दिया।

विश्वामित्र : नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता।

प्रतिहारी : जा रहा हूं, राजन्।

(प्रतिहारी का प्रस्थान)

विश्वामित्र : (आत्मालाप) सुरा ने आत्महत्या कर ली। प्रतिहारी कहता है कि उसने अपना सिर काटकर भगवान् शंकर को चढ़ा दिया .. सुरा ने अन्याय स्वीकार नहीं किया .. सुरा ने

अन्याय स्वीकार नहीं किया। एक अन्याय के विरोध में अपना जीवन दे दिया। बोलो उग्रकाल, तुम्हें एक निर्दोष कन्या की बलि को स्वीकार नहीं करना चाहिये था .. बोलो उग्रकाल, बोलो ।

(प्रतिध्वनि) : आचार्य अगस्त का आदेश है कि उग्रा के साथ वैसा ही व्यवहार होना चाहिये जैसा दूसरी असुर कन्याओं के साथ हुआ है ।

उग्रा को एक दासी की तरह बाजार में बिकना होगा ।

विश्वामित्र : मैं पूछता हूं कि क्या यह संभव है। उग्रा जैसी नारी क्या इसे झेल सकेंगी ।

(प्रतिध्वनि) : आचार्य का आदेश है कि अगर कल सुबह तक उग्रा विक्रय के लिये प्रस्तुत नहीं की गयी तो वे राज्य का पुरोहित पद छोड़ देंगे ।

विश्वामित्र : आज सुरा इसी स्थान पर नीलाम हुई थी। आचार्य का आदेश है कि उग्रा को कल इसी स्थान पर बेचा जाय।

नहीं-नहीं, यह असंभव है। उग्रा मेरी पत्नी है .. भगवान् शंकर को साक्षी मानकर हमने एक-दूसरे को स्वीकार किया था .. नहीं, उग्रा नहीं बिकेगी। उग्रा से पहले भरत कुल के राजा, विश्वामित्र को बेचना होगा ।

बोलो उग्रकाल, ये असुर कब तक पशुओं की तरह हाट में बिकते रहेंगे। आचार्य कहते हैं कि अनार्य कभी आर्य नहीं बन सकता। मैं इसी को चुनौती देना चाहता हूं।

बोलो उग्रकाल, क्या उग्रा आर्य बन सकती है ?

बोलो उग्रकाल, क्या उग्रा आर्य बन सकती है ?

क्या उग्रा आर्य बन सकती है ?

(आकाशवाणी) : हां, उग्रा आर्य बन सकती है ।

विश्वामित्र : हैं, यह तो भगवान् उग्रकाल की वाणी है । बोलो भगवान् कैसे आर्य बन सकती है ?

(आकाशवाणी) : उग्रा, गायत्री मंत्र का पाठ करने से आर्य धर्म में दीक्षित हो जायगी ।

ओउम् भूरभूव स्वः तत्स वितर वरेण्य
भर्गो देवस्य धीमही-धीयो योनः प्रचोदयात्

विश्वामित्र : (दुहराते हैं)

ओउम् भूरभूव स्वः तत्स वितर वरेण्य
भर्गो देवस्य धीमही-धीयो योनः प्रचोदयात्

(पट परिवर्तन)

दूसरा अंक

आठवां दृश्य

(१) विश्वामित्र

(२) उग्रा

(३) भैरव

(४) अगस्त

(५) लोपामुद्रा

दूसरा अंक

आठवां दृश्य

स्थान : वही । पृष्ठभूमि में भगवान् उग्रकाल की एक मूर्ति ।

समय : दूसरे दिन, सुबह ।

(विश्वामित्र और उग्रा का प्रवेश)

विश्वामित्र : देवी उग्रा भगवान् शंकर ने पिछली रात्रि को मुझे गायत्री मंत्र का दर्शन दिया है । देवी, उस मंत्र का पाठ करके तुम आर्य धर्म में दीक्षित हो जाओगी ।

उग्रा : लेकिन आचार्य तो कहते हैं कि एक अनार्य कभी आर्य नहीं बन सकता ।

विश्वामित्र : नहीं, भगवान् उग्रकाल ने स्पष्ट आदेश दिया है । इसमें संदेह को कोई जगह नहीं है ।

उग्रा : आर्यपुत्र, मुझे आपकी आज्ञा मान्य है ।

विश्वामित्र : देवी, भगवान् उग्रकाल को स्मरण कर परम् पवित्र गायत्री मंत्र का उच्चारण करो ।

ओउम् भूरभूव स्वः तत्स वितर वरेण्य
भर्गो देवस्य धीमही-धीयो योनः प्रचोदयात् ।

उग्रा : (दोहराती है)

ओउम् भूरभूव स्वः तत्स वितर वरेण्य
भर्गो देवस्य धीमही-धीयो योनः प्रचोदयात् ।

विश्वामित्र : देवी उग्रा, देखो भगवान् उग्रकाल के मुख पर कैसी मुस्कुराहट है। भगवान् की कृपा से तुम्हें आर्य पद प्राप्त हो गया है।

उग्रा : आर्यपुत्र, भगवान् उग्रकाल असुर देवता हैं। क्या आचार्य अगस्त इस साक्ष्य को स्वीकार कर लेंगे ?

विश्वामित्र : देवी, आचार्य गायत्री मंत्र को कैसे अस्वीकार कर सकते हैं ?

उग्रा : नहीं आर्यपुत्र, आचार्य परम्परा के कठोर समर्थक हैं। वे इस दीक्षा को कभी स्वीकार नहीं करेंगे।

विश्वामित्र : ठीक है देवी, अगर मुझमें सत्य और साधना का बल है तो मैं भगवान् वरुण का आवाहन करूंगा। मुझे विश्वास है कि भगवान् वरुण इस दीक्षा को अवश्य आशीर्वाद देंगे।

उग्रा : आर्यपुत्र, आपकी तपस्या सार्थक हो ! भगवान् वरुण हमारी मनोकामना पूरी करें।

विश्वामित्र : भगवान् वरुण ! हम उग्रा और विश्वामित्र तुम्हारी कृपा की आकांक्षा करते हैं।

भगवन्, भगवान् शंकर ने हमें गायत्री मंत्र का दर्शन दिया है। उनके आदेश से देवी उग्रा ने पवित्र मन से गायत्री मंत्र का पाठ किया है। हे देव, हमें तुम्हारा आशीर्वाद चाहिये। क्या उग्रा आर्य धर्म में दीक्षित हो गयी ? बोलो पूज्यवर, क्या उग्रा आर्य है ? क्या उग्रा आर्य है ?

(आकाशवाणी) हां उग्रा आर्य है ! पवित्र गायत्री मंत्र के पाठ से उग्रा आर्य धर्म में दीक्षित हो गयी है !

विश्वामित्र : देवी उग्रा, भगवान् वरुण ने हमारे आवाहन को स्वीकार

कर लिया । उन्होंने तुम्हारी दीक्षा को प्रमाणित कर दिया ।

उग्रा : यह भगवान् की करुणा का प्रसाद है । आर्यपुत्र, हामरा दुःख दूर हो गया । यह हमारे नये जीवन की नयी सुबह है ।

विश्वामित्र : देवी, तुम थोड़ी प्रतीक्षा करो । मैं आचार्य अगस्त को तुम्हारी दीक्षा का संवाद देकर आता हूं ।

उग्रा : आर्यपुत्र, आचार्य हमें अवश्य आशीर्वाद देंगे ।

(विश्वामित्र का प्रस्थान)

(उग्रा धीरे-धीरे टहलती है)

(भैरव का प्रवेश)

भैरव : पागलों सा वेश) पा गया ! पा गया ! कई महीने से तेरी खोज में घूम रहा था । बोल कुलघातिन, अब तेरी रक्षा कौन करेगा ?

उग्रा : आचार्य भैरव, यह आप क्या कह रहे हैं !

भैरव : नीच, पापिन ! क्या तू अपने पापों से अपरिचित है ! अपने सुख के लिए तूने कुल का नाश कर दिया । तेरी घृणित योजना के कारण पिता, भाई, बंधु–परिवार के सभी पुरुष मारे गये । वह भयानक हार थी । पूरी असुर जाति का नाश हो गया ।

उग्रा : आचार्य, मैंने जो कुछ किया उसके पीछे भगवान् उग्रकाल की प्रेरणा थी ।

भैरव : यह झूठ है ! वह भगवान् का आदेश नहीं हो सकता । एक नीच स्त्री ने वासना से प्रेरित होकर पूरे कुल को मृत्यु के मुंह में झोंक दिया !

उग्रा : आचार्य, शायद भगवान् की यही इच्छा थी। आर्य और अनार्य सनातन शत्रु नहीं रह सकते। भगवान् की इच्छा है कि आर्य और असुर एक हो जायें।

भैरव : मैं भी चाहता हूं कि आर्य और असुर एक हो जायें। पर यह सब कुछ किस कीमत पर ! अगस्त चाहता है कि असुर आर्यों की श्रेष्ठता स्वीकार कर लें। असुर कन्याएं आर्यों की गलीच वासना के सम्मुख समर्पित हों। मैं पूछता हूं कि क्या यही एकता हैं ?

उग्रा : आचार्य, आर्य विश्वामित्र ने रात्रि में गायत्री मंत्र का दर्शन किया है। इस मंत्र के पाठ से असुर आर्य धर्म में दीक्षित हो जायेंगे !

भैरव : यह भी एक षडयंत्र है। असुर जाति को फुसलाने का नया हथकंडा है।

उग्रा : आचार्य, अगर अविश्वास से ही आगे बढे तो हमें सचमुच कुछ नहीं मिलेगा। सुरा आर्य ऋक्ष का वरण कर सुखी जीवन व्यतीत कर रही है। मैंने भी गायत्री मंत्र का पाठ किया है। मुझे विश्वास है कि आचार्यअगस्त हमारी दीक्षा को अवश्य स्वीकार कर लेंगे।

भैरव : यह एक भोला भ्रम है। दुंष्ट अगस्त भगवान् को छोड़ देगा पर एक असुर को कभी मान्यता नहीं देगा।

उग्रा : आर्य विश्वासमित्र ने भगवान् वरुण का आवाहन किया था। भगवान् ने मेरी दीक्षा को स्वीकार कर लिया है।

भैरव : मैं पूछता हूं कि क्या सिर्फ तेरा आर्य बनना काफी है। तेरे विश्वासघात से हमारों असुर दासता का नरक भोग

रहे हैं। क्य वे भी आर्य बनेंगे ? क्या अगस्त उनको भी दीक्षा देगा।

उग्रा : यह एक मुश्किल सवाल है।

भैरव : वासना के उन्माद से तेरी आंखें बंद हो गयी हैं। क्या तुझे मालूम है कि शंबर पुर की पराजय के बाद अगस्त के चेलों ने असुरों पर कितने अत्याचार किये हैं ! पास के बंदीगृह में हजारों असुरों को नारकीय यंत्रणा दी जा रही है। क्या उनका चीत्कार तेरे कानों तक नहीं पहुंचता !

उग्रा : नहीं आचार्य, यह सच नहीं है।

भैरव : यही सच है। क्या तुझे मालूम है कि दुष्ट आर्यों ने असुर कन्याओं के साथ कितना दुर्व्यवहार किया है ? इसी हाट में हजारों असुर कन्याएं पशुओं की तरह नीलाम की गयी हैं।

उग्रा : नहीं आचार्य, अब और मत कहिये !

भैरव : अगस्त ने आदेश दिया है कि तुझे भी इसी स्थान पर दूसरी असुर कन्याओं की तरह बिकना होगा !

उग्रा : यह झूठ है ! बिलकुल असंभव है !

भैरव : विश्वामित्र ने तुझे भ्रम में रखा है। आर्य ऋक्ष ने भी सुरा को पत्नी रूप में स्वीकार नहीं किया।

उग्रा : लेकिन आर्यपुत्र कहते थे... !

भैरव : विश्वामित्र ने झूठ कहा था। कल सुरा इसी हार में नीलाम हुई थी। वणिकराज मघवन ने उसे ऊंचे मूल्य पर खरीदा। लेकिन सुरा दासी नहीं बनी। उसने आत्महत्या

कर ली ।

उग्रा : नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता । मैं पूछता हुं कि इसका प्रमाण क्या है ।

भैरव : उधर देखो, भगवान् उग्रकाल की उस मूर्ति को सुरा ने अपने हाथ से बनाया । कल शाम उसने अपना सिर काट कर भगवान् की मूर्ति को अर्पित कर दिया । भगवान् की मूर्ति पर उसके बलिदान का रक्त है ।

(उग्रा मूर्ति के पास जाती है)

उग्रा : यह मूर्ति सचमुच सुरा के हाथों से बनी है । रक्त की बूंदें भी हैं । सुरा, यह तुने क्या किया ।

भैरव् : अब रोने से क्या होगा । तुझे अपने पापों का प्रायश्चित करना होगा ।

उग्रा : आचार्य, मैंने भयानक पाप किया है । मुझे दंड दीजिये ·।

भैरव : तूने असुर जाति का नाश किया है । मैं तुझे विष देता हूं । उसका पान कर । यही तेरे पापों का प्रायश्चित है ।

(भैरव उग्रा को विष का पात्र देता है)

उग्रा : (हाथ में विष का पात्र लेकर)

भगवन्, मैंने अनन्त पाप किये हैं । उन पापों के प्रायश्चित के लिये मैं विष पान कर रही हूं ।

(उग्रा विष का पान करती है)

(लड़खड़ाती जुबान में) लेकिन प्रभु, मरने से पहले एक आश्वासन मांग रही हूं ।

प्रभु, उनको क्षमा मत करना जिन्होंने जातीय श्रेष्ठता के

अहंकार में मनुष्यों पर घोर अत्याचार किया है ..
प्रभु, उनको कभी क्षमा मत करना ... कभी क्षमा मत करना ...।

(उग्रा मूर्छित होकर गिर पड़ती है)

(भैरव का प्रस्थान । विश्वामित्र का प्रवेश)

विश्वामित्र : देवी उग्रा, बहुत ही सुखद समाचार है । आचार्य अगस्त ने कहा है कि वे इसे सभा के सम्मुख रखेंगे । पर यह तो सिर्फ एक औपचारिता है । तुमने ठीक ही कहा था कि यह हमारे जीवन की नयी सुबह है ।

(उग्रा को देखता है)

लगता है कि मेरे आने में देर हो गयी । देवी प्रतीक्षा करते-करते सो गयीं । *(पास जाकर)* उठो देवी, हमारे दुःख का अंत हो गया ।

उग्रा : *(कहरते हुए)* आर्यपुत्र, मेरा भी अंत निकट है । यह विदा की अंदिम घड़ी है ।

विश्वामित्र : देवी, यह क्या कह रही हो । तुम्हें क्या हो गया है ?

उग्रा : मैंने विष पान कर लिया है । अच्छा हुआ कि मृत्यु से पहले तुमसे भेंट हो गयी । तुम्हारी उग्रा अब तुमसे विदा ले रही है ।

विश्वामित्र : उग्रा, तुमने दुःख को अंधेरी रात को साहस से काट दिया । जब सुबह हुई तो तुमने हिम्मत छोड़ दी ।

उग्रा : यह सुबह नहीं है । ऊषा का आकाश भी नहीं है । किसी ने अंधेरे के मुंह पर लाल खून पोत दिया है । यह असुर

जाति का खून है ।

विश्वामित्र : देवी, यह क्या कह रही हो ?

उग्रा : आचार्य भैरव ने मुझसे सब कुछें कह दिया है । बहन सुरा कल हाट में बिक गयी । आज मेरे बिकने का दिन है । सुरा ने बिकने के बाद आत्महत्या की । मैंने बिकने के पहले विष पिया है ।

विश्वामित्र : देवी, सुरा के लिये मुझे दुःख है । लेकिन तुम्हारी दीक्षा को सबने स्वीकार कर लिया है । स्वयं भगवान् ने आशीर्वाद दिया है ।

उग्रा : सिर्फ मेरे आर्य बनने से क्या होगा । मेरे पाप से हजारों असुर नारकीय जीवन भोग रहे हैं ? क्या आचार्य उन्हें भी धर्म की दीक्षा देंगे ?

विश्वामित्र : देवी, यह काम धीरे-धीरे ही संभव है ।

उग्रा : नहीं, तुम्हारे आचयार्य असुर जाति को कभी स्वीकार नहीं करेंगे ।

तुम्हारी घमंडी जाति ने असुर जाति का हमेशा शोषण किया है ।

विश्वामित्र : देवी, मेरी तरफ देखो । मैं तुम्हें प्यार करता हूं । तुम्हारे प्रेम के लिये मैंने सब कुछ किया है ।

उग्रा : आर्यपुत्र, तुम्हारा प्रेम सूरज की तरह सच है । लेकिन क्या सिर्फ प्रेम काफी है । उग्रा अपने सुहाग के लिये सुरा के रक्त को अपने माथे पर नहीं लगा सकती ।

विश्वामित्र : देवी, तुमने हमारे साथ अन्याय किया है ।

उग्रा : यह एक व्यक्ति का अन्याय है। लेकिन उस अन्याय का क्या होगा जो तुम्हारी जाति ने असुरों के साथ किया है।

विश्वामित्र : देवी, हम उस अन्याय से साथ-साथ लड़ेंगे।

उग्रा : कुछ नहीं होगा ... दम टूट रहा है .. लेकिन जाने से पहले तुम्हारी जाति को एक शाप दे रही हूं। इस जाति ने असुरों का हमेशा शोषण किया है। आर्य जाति अपने पापों के कारण हजारों साल तक नारकीय कष्ट भोगेगी .. यह जाति हजारों साल तक गुलाम रहेगी।

विश्वामित्र : देवी, यह क्या कह रही हो।

उग्रा : अब जा रही हूं। आर्यपुत्र, सदा के लिये विदा दो।

(उग्रा की मृत्यु)

विश्वामित्र : चली गयी। देवी उग्रा सदा के लिये चली गयी।

(अगस्त और लोपामुद्रा का प्रवेश)

अगस्त : आर्य विश्वामित्र, सभा का समय हो गया। मैंने सभी लोगों से परामर्श कर लिया है। भगवान् वरूण ने भी आशीर्वाद दे दिया है।

विश्वामित्र : आचार्य, उग्रा इतनी प्रतीक्षा नहीं कर सकी। उसने विष खाकर प्राण दे दिया।

लोपामुद्रा : देवी उग्रा ने विष खा लिया। यह कैसे घटित हुआ ?

अगस्त : धर्म के अनुसार आत्महत्या महापाप है। भगवान् वरूण असुर कन्या की आत्मा को शांति दें।

विश्वामित्र : यह हमारा पाप था। उग्रा ने हमारे पापों के लिये आत्महत्या की है।

अगस्त : आर्यपुत्र, अब जा रहा हूं। भगवान् की यही इच्छा थी। चलो एक समस्या समाप्त हो गयी।

विश्वामित्र : समस्या समाप्त नहीं हुई। समस्या तो अब शुरू हुई है। उग्रा ने व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह किया। इस व्यवस्था के खिलाफ अब मैं आवाज उठाउंगा। आचार्य मैं अपना मुकुट और राजदंड वापस कर रहा हूं। आज से विश्वामित्र एक राजा नहीं, एक ऋषि का नाम होगा।

अगस्त : आर्य विश्वामित्र, आवेश में निर्णय लेना ठीक नहीं होता।

विश्वामित्र : अब मैं इस सड़ी-गली व्यवस्था के समानान्तर एक नयी व्यवस्था की स्थापना करूंगा। नये समाज में ऊंच-नीच, जात-पात, आर्य-अनार्य की समस्या नहीं होगी। मैं एक नये ब्रह्मांड, नयी सृष्टि की रचना करूंगा।

लोपामुद्रा : आर्य श्रेष्ठ, आप दुःखी हैं लेकिन धर्म का विरोध अनुचित होगा।

विश्वामित्र : जो धर्म असुर जाति पर इतना अत्याचार कर सकता है वह एक जाति का धर्म हो सकता है। सबका धर्म नहीं हो सकता। अब मैं सही मानवीय मूल्यों पर नये धर्म की रचना करूंगा। सबसे पहले मैं देवाधिदेव शंकर को सभी देवताओं के ऊपर प्रतिष्ठित करूंगा।

अगस्त : (लोपामुद्रा से) चलो देवी, दुःख ने आर्य विश्वामित्र को बिलकुल विकृत कर दिया है। इस अधर्म चर्चा को सुनना भी पाप है।

लोपामुद्रा : चलो मुनिवर।

(अगस्त और लोपामुद्रा का प्रस्थान)

(विश्वामित्र उग्रा को उठाकर मूर्ति के चरणों में रखता है)

विश्वामित्र : हे उग्रकाल, तुम दीन दलितों के भगवान् हो। देवी उग्रा ने अन्याय के विरोध में अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया है। इस धरती पर बहुत अन्याय है, प्रभु। वरदान दो कि मैं जीवन भर इस अन्याय का विरोध कर सकूं।

(विश्वामित्र वंदना करता है)

ओम् नमो शिवायः ।

ओम् नमो शिवायः ।

ओम् नमो शिवायः ।

(पटाक्षेप)